हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2014 वर्ष 12 अंक 11

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

साले नौ

सालै नौ पैग़ाम लाया है यही
फ़िक्र कर अब ज़िन्दगी कितनी रही
साल आता जाने की खबरों के साथ
गर नहीं समझा था पहले अब सही
तुझ को क्या करना है मन्सूबा बना
ताकि गुज़रे अच्छी तेरी ज़िन्दगी
कर इबादत रब की और मेहनत भी कर
इस जहाँ में है जवाँ मर्दी यही
ख़ल्क की ख़िदमत को तू शेवा बना
थे सिखाते सब को यह प्यारे नबी
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
ज़िक्रे मुबारक नबी सल्ल0 का	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
हज़रत हसन बसरी रह0	मौ0 सै0 मु0 वाजेह रशीद हसनी नदवी	13
नाज़ुक दौर	मौलाना सै0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी	18
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	20
मिसाली अख़लाक़ क़ुर्आन	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	22
प्यारे नबी सल्ल0 के	फ़ौज़िया सिद्दीक़ा	25
मक्का और मदीना	इदारा	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	29
लोकतंत्र दिवस	मु0 फरमान नदवी	31
दुरूद व सलाम	मौ0 मु0 सानी हसनी रह0	33
चुनौतियों के बीच	डॉ0 हैदर अली खाँ	36
अहले ख़ैर हज़रात से अपील		39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद :- तलाक़ रज्अी है दो बार तक, उसके बाद दस्तूर के मुवाफ़िक़ रख लेना या छोड़ देना भली तरह से और तुम को रवा (उचित) नहीं कि ले लो कुछ अपना दिया हुआ औरतों से मगर जब कि पति पत्नी दोनों ड़रें इस बात से कि कायम न रख सकेंगे हुक्म अल्लाह का फिर अगर तुम लोग डरो इस बात से कि वह दोनों कायम न रख सकेंगे अल्लाह का हुक्म तो गुनाह नहीं दोनों पर इसमें कि औरत बदला दे कर छूट जाये यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमायें हैं तो उनसे आगे न बढ़ो और जो कोई बढ़ चले अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं से तो वही लोग हैं जालिम(229)।

फिर अगर उस औरत को तलाक़ दी यानी तीसरी बार तो अब हलाल नहीं उसको वह औरत उसके बाद जब तक निकाह़ न करे किसी मर्द से उसके अलावा, फिर अगर तलाक़ देदे दूसरा पति तो कुछ गुनाह नही उन दोनों पर कि फिर एक दूसरे से अगर ख़्याल करें कि कायम रखेंगे अल्लाह का हुक्म और यह सीमायें बाँधी हुई हैं अल्लाह की, बयान फरमाता है उनको जानने वालों के वास्ते(230)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. इस्लाम से पहले परम्परा थी कि दस बीस जितनी बार चाहते बीवी को तलाक़ देते मगर इद्दत के समाप्त होने से पहले रज्अत कर लेते फिर जब चाहते तलाक़ देते और रज्अत कर लेते और इस प्रकार बाज लोग औरतों को बहुत सताते इस वास्ते यह आयत उतरी कि तलाक़ जिसमें रुज्अत हो सके कुल दो बार है एक या दो तलाक़ तक तो अधिकार दिया गया कि इद्दत के अन्दर पति चाहे तो पत्नी को फिर नियम के मुताबिक़ रख ले या भली तरह से छोड़ दे फिर इद्दत के बाद रज्अत का हक बाक़ी नहीं रहता हाँ अगर दोनों राज़ी हों तो दोबारा निकाह कर सकते हैं और अगर तीसरी बार तलाक़ देगा तो फिर उनसे निकाह भी सही न होगा जब तक दूसरा मर्द उससे निकाह करके सुह्बत (संभोग) न कर ले।

फायदा: कायदे के मुताबिक रखने या छोड़ने से उद्देश्य यह है कि रज्अत करे तो मुवाफिकत और हुस्ने मुआशरत के साथ रहे औरत को कैद में रखना और सताना मक़्सूद न हो जैसा कि उनमें रिवाज था वरना आसानी और भलाई के साथ उसको विदा करे।

2. मर्दों को यह उचित नहीं कि औरतों को जो महर दिया है उसको तलाक़ के बदले में वापस लेने लगें परन्तु यह जब उचित है कि लाचारी (विवशता) हो और किसी तरह दोनों में अनुकूलता न आये और उनको इस बात का अंदेशा

शेष पृष्ठ................09 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अस्र की नमाज़ से पहले

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ते थे वह इस तरह कि दो रकअत पढ़ कर बैठ जाते और तशश्हुद (अत्तहियात) पढ़ते थे जो करीबी फरिश्तों, मुसलमान मोमिनीन के सलाम पर सम्मिलित है, फिर दो रकअत पूरी फरमा कर सलाम फेरते।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला उस व्यक्ति पर रहम फरमाये जो अस्र से पहले चार रकअतें पढ़ता है।

(अबू दाऊद—तिर्मिजी)

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्र की नमाज़ से पहले दो रकअतं पढ़ते थे।

(अबू दाऊद)

मग़रिब से पहले और उसके बाद—

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 और हज़रत आइशा रज़ि0 से दो हदीसें सहीह इस बारे में पीछे आ चुकी हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मग़रिब के बाद रकअतें पढ़ते थे।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुगफ्फल रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मग़रिब से पहले नमाज़ पढ़ा करो और तीन बार इरशाद फरमाया, फिर फरमाया जिसका जी चाहे।

(बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने किबारे (बुज़ुर्ग) सहाबा को देखा है कि मग़रिब के करीब खंभों की तरफ दौड़ पड़ते थे।

(बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हम रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में सूरज डूबने के बाद मग़रिब की नमाज़ से पहले दो रकअतें पढ़ा करते थे लोगों ने कहा क्या रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी पढ़ते थे हमने कहा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम को पढ़ते देखते थे लेकिन न कभी पढ़ने का हुक्म दिया और न मना फरमाया।

(मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हम मदीना में थे जब मुवज़्ज़िन मग़रिब की अज़ान देता तो लोग खंभों की तरफ दौड़ पड़ते और दो रकअतें पढ़ते थे अगर कोई पड़ोसी उस समय मस्जिद में आ जाता तो नमाज़ पढ़ने वालों की ज़्यादती देख कर ये गुमान करता कि मग़रिब की नमाज़ पढ़ी जा रही है।

(मुस्लिम)

शेष पृष्ठ...............12 पर

ज़िक्रे मुबारक नबी सल्ल० का

—डॉ० हारून रशीद सिद्दीक़ी

शुरुअ़ करता हूं अल्लह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और बहुत ही रहम करने वाला है, तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालनहार है, बड़ा मेहरबान है, बहुत ही रहम करने वाला है, हिसाब व किताब और जज़ा व सज़ा के दिन का मालिक है, उसी से हम कहते हैं ऐ हमारे रब हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं, हम को सीधी राह दिखा दे वह राह जिस पर चलने वालों को तू ने अपने इनआ़मात दिये, वह राह नहीं कि जिस पर लोग चलें तो उन पर तेरा ग़ज़ब उतरा, न गुमराहों की राह, ऐ हमारे रब हमारी यह दुआ़ क़बूल फरमा ले। आमीन!

अल्लाह तआला अपने बन्दों पर जितना करम फ़रमाते हैं, जितनी शफ़क़त फ़रमाते हैं, जितना रहम फरमते हैं, उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता अल्लाह ने खुद एलान फरमा दिया कि मेरी रहमत हर चीज़ को शामिल है यानी हर एक के लिए है (7:56)। अल्लाह ने खुद एलान फ़रमा दिया कि "मुझे पुकारो मैं जवाब दूंगा (यानी मुझ से मांगो मैं अता करूंगा) (40:60) और अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कहला दिया कि "जो अल्लाह से नहीं मांगता अल्लाह उस पर गुस्सा होता है। (हदीस) और अल्लाह ने अपने करम से इस शुब्हे को भी दूर फरमा दिया कि हर बन्दे की आवाज़ अल्लाह तक पहुंचेगी या नहीं? साफ एलान फरमा दिया "मैं क़रीब हूं (2:186) और बड़ी शफक़त से फरमाया "हम तो तुम्हारी गरदन की रग से भी ज़्यादा करीब हैं, (50:16)।

उसी करम वाले आक़ा ने अपने अहकाम और अपना पैग़ाम अपने बन्दों तक पहुंचाने के लिए नुबूवत व रिसालत का सिलसिला जारी फ़रमाया, हमारे जददे अमजद दादा आदम अलैहिस्सलाम सब से पहले इन्सान भी हैं और अल्लाह के नबी भी हैं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश उस तरह नहीं हुई जिस तरह किसी इन्सान की पैदाइश अपनी माँ के रहिम से होती है, अल्लाह तआला ने मिट्टी से एक पुत्ला तैयार करके उसमें रूह डाल दी फिर उसके जिस्म को हुस्न व जमाल से आरास्ता किया फिर अपनी कुदरत से उनकी पसली से एक औरत (दादी हव्वा) को निकाल दिया, और हज़रत आदम अलै० से उनको ब्याह दिया, दोनों दादा दादी जन्नत में रहते थे दोनों में बड़ी महब्बत थी, दोनों को बेहतरीन जन्नती लिबास मिला हुआ था, जब अल्लाह को मंजूर हुआ कि हमारे, दादा दादी दुनिया में आयें तो उसके अस्बाब पैदा हुए और वह दुनिया में आए, फिर जब अल्लाह को मंजूर हुआ तो

उन में औलाद का सिलसिला शुरुअ़ हुआ और खूब औलाद हुई। जब अल्लाह तआला ने आलमे मलाइका में आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फरमाया था तो आदम अ0 की फज़ीलत ज़ाहिर करने के लिए सब को सजदा करने का हुक्म फ़रमाया था, अल्लाह का हुक्म सुनते ही सब सजदे में गिर गये थे लेकिन उन फरिश्तों के बीच एक जिन्नी अ़ज़ाज़ील था, उसके दिल में घमण्ड आया और उसने सजदे से इनकार कर दिया, इस तरह वह मलऊन हो गया और जन्नत से निकाल दिया गया और वह भी दुनिया में उतार दिया गया, उसने आदम अलैहिस्सलाम पर हसद किया और औलादे आदम को अल्लाह की इताअ़त से हटाने की कसम खाई और इस काम के लिए अल्लाह तआला से क़ियामत तक की छूट मांगी, अल्लाह तआला को भी अपने बन्दों का इम्तिहान लेना था उसको छूट देदी, चुनांचि वह और उसकी औलाद, औलादे आदम को बे राह करने पर लगी हुई है और क़ियामत तक लगी रहेगी लेकिन अल्लाह पर ईमान रखने वाले और उस पर भरोसा करने वाले खास बन्दों पर उस का पूरा इख़्तियार न हो सकेगा। (16:99)

अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की रहनुमाई के लिए नुबूवत व रिसालत का सिलसिला चलाया और हर ज़माने में, हर इलाक़े में अपने नबी व रसूल भेजता रहा जिन की सही तादाद अल्लाह ही को मालूम है उनमें बाज़ बड़े ही मरतबे वाले हुए हैं जैसे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और सबसे आखिर में सबसे ज़्यादा मरतबे वाले सय्यिदुल अंबिया वर्रुसुल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तमाम आ़लम के लिए और क़ियामत तक के लिए रसूल बना कर भेजा।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने बे माँ बाप के पैदा फरमाया, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को बे बाप के पैदा फरमाया। बाकी सभी अंबिया व रुसुल को माँ बाप के ज़रिए पैदा फरमाया, आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी माँ बाप के ज़रिए पैदा फरमाया। आपके वालिद माजिद हज़रत अब्दुल्लाह और माँ हज़रत आमिना थीं, मशहूर कौल के मुताबिक़ 12 रबीउल अव्वल दो शंबा की सुब्ह को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश हुई।

पैदाइश से पहले ही वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया था इसलिए आप यतीम थे, चूंकि आपको सारे आलम का उस्ताद व रहनुमा बनना था इसलिए अल्लाह की मसलहत यही हुई कि आप का उस्ताद सिर्फ बारी तआला हो इस तरह आपने किसी से पढ़ना लिखना नहीं सीखा और आप का लक़ब उम्मी (अनपढ़) हुआ। 40 साल की उम्र से वही का सिलसिला शुरुअ़ हुआ जो तेइस साल तक जारी रहा, वही उतरने के साथ साथ तब्लीग़े रिसालत का सिलसिला भी जारी रहा यहाँ तक कि आयत उतरी।

अनुवादः आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए बतौरे दीन के इस्लाम को पसन्द कर लिया। (5:3) कुर्आन मजीद दीने इस्लाम ही बताने के लिए उतर रहा था दीने इस्लाम पूरा हुआ कुर्आन भी पूरा हो गया। सहाब–ए–किराम रज़िअल्लाहु अन्हुम ने एक तरफ कुर्आन मजीद महफूज़ कर लिया तो दूसरी जानिब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी बातें और सारे आमाल महफूज़ कर लिये जो बाद में अहादीस की किताबों की शक्ल में लिख लिये गये।

इसी कुर्आने मजीद से हम को मालूम हुंआ कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस तरह दुआ की थी "ऐ हमारे रब इनके यानी हमारी औलाद में उन्हीं में से एक रसूल भेज जो हम पर तेरी आयतें पढ़े और उन को किताब व हिकमत सिखाए और उनको पाक करे बेशक आप ज़बरदस्त हिकमत वाले हैं।" (2:129)

अल्लाह तआला को यह करना ही था दुआ क़बूल हुई, अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मबऊस फरमा कर एलान फरमा दिया "अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और उनको पाक करते हैं और उनको किताब व हिकमत सिखाते हैं। (3:164) और फरमाया "तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक ऐसा रसूल आया जिस पर तुम्हारी तकलीफ गिरां गुज़रती है वह तुम्हारी हिदायत के हरीस रहते हैं और ईमान वालों पर बड़े शफीक़ व मेहरबान हैं। (9:128) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

अल्लाह तआला ने अपने नबी को हुक्म दिया कि "आप फरमा दीजिए कि अगर अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरा इत्तिबाअ़ (पैरवी) करो फिर अल्लाह खुद तुम से महब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाह भी मुआफ कर देगा वह तो ग़फूरुर्रहीम है" (3:31)

जिसने रसूल सल्ल0 की इताअ़त (पैरवी) की उसने अल्लाह की इताअत की (4:80) फरमाया "वह (रसूल) तो अपने नफ़्स की चाहत से बात भी नहीं करते उनकी बात तो बस वही (अल्लाह का इल्हाम) होती है। (35:3)

अल्लाह ने अपने हबीब को क्या क्या दरजात अता किये फरमाया "आप तो आला अख़लाक़ वाले हैं" (86:4)

फरमाया "आपकी खातिर हमने आप का ज़िक्र बुलन्द किया (49:4) फरमायाः हमने तो आपको तमाम आलम के लिए रहमत बना कर भेजा है (21:107)। फरमाया "बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते रहते हैं यानी अल्लाह आप पर रहमत नाज़िल फरमाता रहता है और फरिश्ते रहमत उतारने की दुआ करते रहते हैं, हुक्म दिया ऐ ईमान वालो तुम नबी पर दुरूद भेजा करो और खूब खूब सलाम पहुंचाया करो। (33:56) सल्लल्लाहु

अलैहि व अला आलिही व असहाबिही व सल्लम तस्लीमन कसीरन कसीरा।

आपके रब ने आप से फरमाया मैं आप को इतना दूंगा कि आप राजी हो जाएंगे (93:5)। आपको हमने कौसर अता किया (108:1) आपको आपका रब मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा ले गया यानी मक्का मुकर्रमा से बैतुल मुकद्दस ले गया। फिर हदीसों के मुताबिक वहां आप को अंबिया अलैहिस्सलाम का इमाम बना कर नमाज़ पढ़वाई, फिर आपका रब बुराक़ सवारी के ज़रिए जिबरील अमीन के साथ आसमानों पर ले गया, फिर उस मकाम तक पहुंचाया जहाँ जिबरील अमीन का पहुंचना मुमकिन नहीं हो सका वहां आपसे रब ने आप को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा बाज़ जहन्नमियों और बाज़ जन्नतियों का मंज़र दिखाया, उम्मत के लिए पाँचों वक्तों की नमाज़ का तुहफा मिला, ग़रज़ कि मेराज का यह तवील तरीन सफर सारे अजायबात व तफ़्सीलात के साथ रात ही रात पूरा हुआ और आप फ़ज्र से पहले अपने बिस्तरे मुबारक पर तशरीफ ले आये। सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बे हिसाब मुअ़जिजे अता फरमाए, उनमें से सब से बड़ा मुअ़जिजा कुर्आने मजीद है कि उस की एक आयत की तरह भी दुनिया वाले न बना सके न बना सकेंगे। दूसरा बड़ा मुअ़जिज़ा मेराज का है जिस की तरफ ऊपर कुछ इशारा किया गया है, आपकी उंगलियों के इशारे पर चाँद दो टुकड़े हो गया फिर मिल गया, आपकी जुदाई में ख़ुजूर का खम्बा बच्चों की तरह आवाज़ निकाल कर रोया फिर चुप हुआ, आपके लुआबे मुबारक (थूक) की बरकत से हज़रत जाबिर के यहां चन्द आदमियों का खाना सौकड़ों ने खाया, आपने थोड़े से पानी में हाथ डाल दिया तो हज़ार से ज़्यादा लोगों ने वुजू किया और पिया भी, दरख़्त और पत्थर से आप पर सलाम पढ़ने की आवाज़ सुनी गई कंकरियों ने कल्मा पढ़ा, गोह ने अरबी ज़बान में आप के रसूल होने की गवाही दी, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 के तोशे दान की थोड़ी सी खजूरों पर आपने बरकत की दुआ फरमाई तो हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 पचीस साल से ज़्यादा तक उसमें से खाते खिलाते और लोगों को देते रहे, लेकिन अफ़्सोस अल्लाह की मसलहत हज़रत उस्मान रज़ि0 की शहादत के रोज़ हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 का यह तोशा दान कहीं खुल कर खो गया यही हज़रत अबू हुरैरा बयान फरमाते हैं कि अस्हाबे सुफ्फा भूखे थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में एक प्याला दूध था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा ही के ज़रिए अस्हाबे सुफ्फा को बुला भेजा वह आगये, हुक्म हुआ कि तुममें से हर एक प्याले से दूध पिये, हर एक ने पेट भर भर कर पिया फिर हज़रत अबू हुरैरा को पीने का हुक्म हुआ उन्होंने भी पिया, हुक्म हुआ और पियो, और पिया

यहाँ तक कि कसम खाई कि अब न पिया जाएगा, फिर दूध आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नोश फरमाया कितना मजबूत था उनका ईमान जिन्होंने अपनी आँखों से यह मुअ़जिज़े देखे और कितने सवाब के मुस्तहिक़ हैं वह खुश नसीब जो बिन देखे उन मुअ़जिज़ात पर और खातिमुल अंबिया की बताई हुई सारी ग़ैब की बातों पर ईमान लाए, और आपसे वालिहाना महब्बत रखते हुए आपकी इताअ़त पर कमर बस्ता हैं। अलहम्दु लिल्लाह लेखक भी उन्हीं में से है। वह हैं ख़ैरुल बशर वह हैं ख़ैरुल अनाम उनपे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम।

❖❖❖

क़ुर्आन की शिक्षा...............

हो कि सख़्त मुख़ालफत की वजह से हम अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी मुआशरते बाहमी में न कर सकेंगे और मर्द की तरफ से अदाये हुकूके पत्नी में दोष भी न हो वरना माल लेना हराम है।

3. ऐ मुसलमानों अगर तुमको यह डर हो कि पति और पत्नी में ऐसी दूरी है कि उनका गुजर बसर मुवाफकत से न होगी तो फिर उन दोनों पर कुछ गुनाह नही कि औरत माल दे कर अपने आप को निकाह से छुड़ा ले और मर्द वह माल ले ले उसको "खुलआ" कहते हैं और जब इस जरूरत की हालत में पति पत्नी को खुलआ करना दुरुस्त हुआ तो सब मुसलमानों को इस में कोशिश करनी ज़रूर दुरुस्त होगी।

फायदा: एक औरत आप सल्ल0 की खिदमत में आई और कहा कि मैं अपने पति से नाखुश हूं उसके यहां रहना नहीं चाहती आप सल्ल0 ने तहक़ीक किया तो औरत ने कहा कि वह मेरे हुकूक में कोताही नहीं करता और न उसके अख़्लाक़ व दीनदारी पर मुझको आपत्ति है लेकिन मुझ को उससे मुनाफरत तबई (प्राकृतिक) है आप सल्ल0 ने औरत से महर वापस करा दिया और पति से तलाक़ दिलवा दी उस पर यह आयत उतरी—

4. यह सब अहकाम मजकूरह यानी तलाक़, और रजअ़त, और खुलअ, सीमाऐं और जाब्ते अल्लाह तआला को मुतअय्यन करदा है उनकी पूरी पाबन्दी ज़रूरी है किसी किस्म का खिलाफ और तबदीली और कोताही उनमें न करनी चाहिए।

5. यानी अगर पति अपनी औरत को तीसरी बार तलाक़ देगा तो फिर औरत उसके लिए हलाल न होगी जब तक की वह औरत दूसरे मर्द से निकाह न करले और दूसरा पति उस से संभोग करके अपनी खुशी से तलाक़ न दे उसकी इद्दत पूरी करके फिर पहले पति से फिर से निकाह हो सकता है उसको हलाला कहते हैं और हलाले के बाद पहले पति के साथ निकाह होना जब ही है कि उनको हुक्मे इलाही के कायम रखने यानी एक दूसरे के हुकूक अदा करने का ख़्याल और उस पर ऐतमाद हो वरना ज़रूर आपसी लड़ाई और हुकूक नष्ट करने की नौबत आयेगी और गुनाह में लिप्त होंगे। ❑❑

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

कुरैश के लीडर अबू सुफियान की मुसालिहत (समझौते) की कोशिश–

चूंनांचे ऐसा ही हुआ कि अबू सुफियान बिन हरब बिन रबीआ पहुंचे, उनकी एक ही बेटी हज़रत उम्मे हबीबा आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहलिया भी थीं, इस तरह वह उम्मुलमोमिनीन थीं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर ही में रहती थीं, अबू सुफियान पहले उनके पास पहुंचे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिस्तर पर बैठने लगे, इस पर उनकी साहिबज़ादी उम्मुलमोमिनीन ने फौरन बिस्तर पलट दिया, इस पर वह ताज्जुब से बोले की बेटी! यह नहीं समझ में आया कि तुमने इस बिस्तर को मेरे लिए मुनासिब नहीं समझा, उन्होंने जवाब दिया कि यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर है और आप शिर्क करने वाले हैं, लिहाज़ा शिर्क में गन्दगी है, उन्होंने कहा बखुदा तुम में मुझसे रुख़्सत होने के बाद खराबी आ गयी है। अबू सुफियान वहां से निकल कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे और सुलह बहाल करने के सिलसिले में बात की, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कोई जवाब नहीं दिया वह फिर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के पास गए कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सबसे ज़्यादा कुरबत रखने वाले फर्द हैं, उनसे बात की, कि मुआहिदे को पिछली हालत पर बाक़ी रखने की कोशिश कर दें कि उसको ख़त्म न किया जाये, उन्होंने कहा कि मैं कुछ नहीं कर सकता, फिर वह मायूस हो कर हज़रत उमर रज़ि0 के पास आये, उनको भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कुरबत का मकाम हासिल था, लेकिन उन्होंने जवाब में (सख़्त लहजा इख़्तियार करते हुए कहा) कि भला मैं तुम लोगों की सिफारिश करूंगा बख़ुदा मैं तो ऐसा हूँ कि मुझको कोई साथी न मिले सिवाए चींटियों के तो मैं चींटियों को लेकर तुमसे मुकाबला करूँ[1]।

फिर अबू सुफियान, हज़रत अली रज़ि0 के पास आए, वहीं उनकी अहलिया साहिबा हुजूर सय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादी हज़रत फातिमा भी बैठी थीं और उनके साहिबज़ादे हसन रज़ि0 भी थे जो सामने खेल रहे थे उन्होंने कहा कि भाई अली! खानदानी तौर पर तुमसे हमारी क़राबत भी है और मैं एक ज़रूरत से आया हूं देखो! नाकाम वापस न जाऊँ मेरे लिए सिफारिश कर दो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से। उन्होंने कहा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो भी पक्का इरादा

1. ज़ादुल मआद 3/397

कर लिया होगा, उसमें हम उनसे बात नहीं कर सकते, इस पर अबू सुफियान ने हज़रत फातिमा रज़ि0 से कहा कि तुम अपने इस छोटे से बच्चे से कह सकती हो कि वह हम लोगों के दरमियान तअल्लुक़ात बहाल करा दें। इस तरह वह हमेशा के लिए अरबों का सरदार करार पा जायेगा। उन्होंने कहाः मेरे बेटे की यह हैसियत नहीं है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऐसे किसी मामले में कोई सिफारिश करे, इस पर अबू सुफियान ने हज़रत अली रज़ि0 से कहा कि ऐ भाई अली! मामलात को मैं देख रहा हूँ कि मेरे लिए दुशवार बन गए हैं, तुम मुझको हमदर्दी का मशविरा दो, उन्होंने कहा बखुदा मेरे ज़हन में कोई ऐसी सूरत नहीं जिससे तुम्हारा काम चल सके, लेकिन तुम कुरैश व कनाना के सरदार हो अपनी बात का लोगों में ऐलान कर दो और अपने वतन लौट जाओ, इस पर उन्होंने कहा कि क्या इससे काम चल जायेगा, उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद तो नहीं है लेकिन तुम्हारे लिए इसके अलावा और क्या बात कह सकता हूँ[1]।

अबू सुफियान का ऐलान–

अबू सुफियान मस्जिद में आए और ऐलान किया कि ऐ लोगो! हुदैबिया में होने वाले मुआहिदे से जो ताल्लुक़ात (सम्बन्ध) क़ायम हुऐ थे मैं उनको बहाल किये देता हूं और अपने ऊँट पर बैठ कर मक्का वापस चले गए। जब कुरैश के पास पहुंचे तो उन्होंने पूछा क्या करके आए हो? उन्होंने कहा मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गया था उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, फिर मैं अबू बक्र के पास गया उनसे भी कोई भलाई न मिली, फिर मैं उमर के पास गया तो उनको बड़ा दुश्मन पाया, फिर अली के पास गया, दूसरे लोगों के मुकाबले में उनमें नरमी पायी, उन्होंने मुझे यह मशविरा दिया, चुनांचे मैंने उस पर अमल किया। लोगोंने कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको क़ाबिले अमल क़रार दिया? उन्होंने कहा नहीं, लोगों ने कहा तुम्हारी खराबी हो, बखुदा तुम्हारे साथ खेल किया[2]।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिकमतेअमलीः–

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़र की तैयारी का हुक्म फरमा दिया, लेकिन यह भी फरमाया की पोशीदा रखा जाये, कुरैश को हमारी इस तैयारी की ख़बर न पहुंचे ताकि हम बिला इत्तिला वहां पहुंच सकें, चुनांचे मुसलमानों ने इसको पूरे तौर पर पोशीदा रखा, अलबत्ता एक मुसलमान हातिब बिन बलतआ ने कुरैश को एक ख़त के ज़रिए खतरे से आगाह करने की कोशिश की और एक मुसाफिर औरत के ज़रिए ख़त भेजा, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को "वही" के ज़रिए मालूम हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अली, हज़रत जुबैर, हज़रत मिक़दाद

1. सीरते इब्ने हिशाम 2/396–397।
2. सीरते इब्ने हिशाम 2/397, अल कामिल फ़ित्तारीख 2/241।

और हज़रत अबू मुरसिद ग़नवी रज़ि0 को उस औरत का पीछा करने के लिए भेजा, कि ख़त उससे ले लिया जाए, चुनांचे हज़रत अली रज़ि0 अपने साथियों के साथ फौरन रवाना हो गए और कुछ फासले पर उस औरत तक पहुंच गये और ख़त तलब किया उसने ला इल्मी (अज्ञानता) का इज़हार किया, हज़रत अली ने कहा कि अल्लाह के रसूल की बात ग़लत नहीं हो सकती ख़त हवाले करो वरना तुम्हारे जिस्म की तलाशी ली जायेगी, चुनांचे उसने अपने सर के बालों के जूड़े से ख़त निकाल कर दिया, ख़ात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ ख़त भेजने वाले सहाबी हातिब बिन बलतआ को तलब किया गया और उनसे जवाब तलब किया गया कि इस्लाम से दुश्मनी क्यों? उन्होंने अपनी सफाई दी कि मैंने बद नीयती से नहीं किया, इसमें एक ज़ाती ज़रूरत थी, लोगों ने अर्ज़ किया कि यह इस्लाम से दुश्मनी का काम है, इनको क़त्ल कर दिया जाये, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह बद्र के जिहाद में शरीक थे और बद्र में शरीक शख़्स की बात दूसरों से अलग है। इसलिए इनको छोड़ दिया और इस तरह यह पोशीदगी क़ायम रही। ऐसे संगीन जुर्म पर छोड़ देने में एक तरफ तो अपनी रिआयत और अच्छा इख़्लाक़ था, ज़रा भी गुन्ज़ाईश हो तो आप रिआयत फरमाते थे, दूसरी तरफ एक अच्छी हिक्मतेअमली (कूटनीति) थी, ख़ताकार के मुसलमान होने और उज़्र बयान करने पर रिआयत कर देने से उस शख़्स का दिल जीत लेते थे, जिससे दुश्मनों को इस्लाम की रवादारी का अच्छा पैग़ाम जाता था।

❖❖❖

अनुरोध

पाठकों से अनुरोध है कि वह 'सच्चा राही' के बारे में हमको अपनी राय अवश्य भेजें।

प्यारे नबी की प्यारी..............

इशा से पहले और उसके बाद–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत बयान हो चुकी है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो रकअतें इशा के बाद पढ़ी हैं।

हज़रत इब्ने मुगफ्फल रज़ि0 से यह रिवायत गुजर चुकी है कि हर दो अज़ानों के बीच नमाज़ है।

जुमा की सुन्नतें–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जुमे के बाद दो रकअतें पढ़ी हैं। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरह से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोग जुमे की नमाज़ जमाअत से अदा कर चुको तो उसके बाद चार रकअतें पढ़ लिया करो। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमे की नमाज़ पढ़ कर घर में चले जाते और दो रकअत पढ़ते थे। (मुस्लिम) ❑❑

हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाह अलैह

—मौ0 सै0 मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी —अनुवादः जुनैद नदवी

हज़रत हसन बिन अबिल हसन यसार बसरी रह0 21 हिज्री में पैदा हुए कुन्नियत अबू सईद थी वालिद मोहतरम यसार सहाबिये रसूल, कातिबे वही हज़रत जैद बिन साबित अंसारी रज़ि0 के गुलाम थे, यसार असलन मैसान के कैदियों में से थे मदीना में सुकूनत इख़्तियार की और फिर गुलामी से आज़ाद हुए हज़रत उमर रज़ि0 के अहदे ख़िलाफ़त में शादी की हज़रत हसन बसरी रह0 की वालिदा उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा रज़ि0 की बांदी थीं हज़रत हसन बसरी रह0 को बेशुमार सहाबा से शरफे तलम्मुज़ हासलि है कुर्आन करीम हज़रत हत्तान बिन अब्दुल्लाह रकाशी से सीखा और बेशुमार ताबईन से अहादीस की रिवायत की सहाब–ए–किराम में से हज़रत उस्मान रज़ि0, तलहा रज़ि0, हज़रत उमर रज़ि0 और भी दीगर सहाब की ज़ियारत की हज़रत उमर रज़ि0 ने उनके हक़ में दुआ की थी। ऐ अल्लाह इन्हें दीन का तफक़्कुह अता फरमा और मक़बूलियते आम्मा अता कर।

मुहम्मद बिन सआद तबक़ात (भाग 7/157–158) में कहते हैं हज़रत हसन रह0 इल्म व अमल के जामे और बुलन्द मक़ाम के हामिल थे वो बएक वक़्त फक़ीह, आबिद, शबे जिंदा दार, खुश खिसाल, फसीहुल्लिसान, सिक़ा और रिवायते हदीस में हुज्जत और निहायत वसी इल्म के मालिक थे अलबत्ता उनके मरासील हुज्जत नहीं हैं। युनुस बिन उबैद कहते हैं हज़रत हसन बसरी रह0 से ज़्यादा क़ौल व अमल में यक्सानियत मैंने कहीं नहीं देखी। औफ कहते हैं राहे जन्नत का वाक़िफ कार हज़रत हसन बसरी रह0 के मुकाबले में मुझे कोई दूसरा नज़र न आया इब्राहीम बिन ईसा यश्करी का बयान है कि हज़रत हसन बसरी रह0 से ज़्यादा फ़िक्रे आख़िरत में मुन्हमिक रहने वाला और ग़मगीन रहने वाला मैंने नहीं देखा मैंने जब भी उनसे मुलाक़ात की उन्हें किसी ज़िक्र में मुन्हमिक पाया ख़ालिद बिन सफ़वान कहते हैं के मेरी मुलाक़ात मस्लमा बिन अब्दुल मलिक से हुई उन्होंने पूछा कि ख़ालिद! हसन बसरी के क्या हालचाल हैं? मैंने कहा अल्लाह तुम्हें खुश रखे हसन के बारे में मैं तुम्हें एक पते की बात बताता हूं और मैं तो उनका पड़ोसी हूं उनकी मजलिसों का हाज़िर बाश इंसान हूं और दूसरों के मुकाबले में उनको बहुत अच्छी तरह जानता हूं हज़रत हसन के ज़ाहिर व बातिन और क़ौल व फेल की यक्सानियत में मिसाल नहीं अगर वो किसी चीज का फैसला करलें तो उसको पूरा करते हैं और अगर कोई काम शुरु करें तो उसे अंजाम तक पहुंचाते है। लोगों को किसी काम का हुक्म देने से पहले वो खु[illegible] उस पर अमल करते हैं और किसी चीज़ से रोकने से पहले

खुद उससे रुकते हैं वो लोगों से मुस्तग़नी हैं लेकिन पूरी दुनिया उनकी मुहताज है मस्लमा बिन अब्दुल मलिक ने ये सुनकर कहा कि वो क़ौम कैसे गुमराह हो सकती है जिसमें ऐसे लोग हों। अल्लामा इब्ने जौजी ने सिफतुस्सफ़वा में हकीम बिन जाफ़र के हवाले से लिखा है कि मस्लमा ने मुझसे कहा कि अगर तुम्हें हज़रत हसन बसरी की जियारत की सआदत नसीब होती तो तुम मुशाहिदा करते कि हज़रत हसन बसरी रह0 के दिल में तमाम ख़ल्क़े खुदा के ग़म और फ़िक्रें जमा हो गई थीं। मोहम्मद बिन साद कहते हैं कि यज़ीद बिन हौशब ने बयान किया कि हसन बसरी रह0 और हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से ज़्यादा खुदा की खशीयत रखने वाला मैंने नहीं देखा ऐसा लगता था जैसे दोज़ख इन्हीं दोनों के लिए पैदा की गई है। हज्जाज अल असवद ने कहा कि एक शख़्स ने तमन्ना की काश मुझे हसन बसरी का सा जुह्द, इब्ने सीरीन का तक़वा व एहतियात, आमिर बिन अब्दे कैस का ज़ौक़े इबादत, सईद बिन मुसय्यिब का तफक्कुह और मितरक बिन शखीर का सा ज़िक्र का ज़ौक व शौक़ का कुछ हिस्सा हासिल होता, कहते हैं कि लोगों ने इस सिलसिले में ग़ौर किया तो इन तमाम औसाफ के हामिल हज़रत हसन बसरी की शख़्सियत नज़र आई, हम्माद बिन सल्मा मुतवफ़्फ़ी 167 हिज्री कहते हैं कि मुझे अली बिन जैद ने बतलाया कि मैंने मुतअख्खिरीन में सईद बिन मुसय्यिब, उरवा बिन जुबैर, और क़ासिम बिन उबैदुल्लाह की जियारत की सआदत हासिल हुई लेकिन हज़रत हसन का मुमासिल कोई नज़र न आया।

अबू कतादा का बयान है कि उमर बिन खत्ताब रज़ि0 की राय और उनके मसलक से क़रीबतर हज़रत हसन से ज़्यादा कोई और मुझे मालूम नहीं, हम्माद बिन ज़ैद 98–179 हि0 कहते हैं कि अय्यूब ने मुझे बताया कि हज़रत हसन जब गुफ़्तगू करते तो ऐसा लगता जैसे मोती बोल रहे हों उनके बाद भी बहुत से मुक़र्ररीन और वाईजीन हुए हैं उनके मुंह से अल्फ़ाज़ ऐसे निकलते हैं जैसे क़ै हो। वो निहायत वसी इल्म के हामिल, तफ़सीर व हदीस के माहिर होने के साथ गायत दरज़ा शीरीं बयान फसीहुल्लि–सान और सामईन में असर अंदाज़ होने वाली शख़्सियत के मालिक थे अबू अम्र बिन अला का बयान है कि मैंने हसन बसरी और हज्जाज बिन युसुफ से बढ़ कर फसीह नहीं देखा और हसन हज्जाज से ज़्यादा फसीह थे।

अबू हय्यान तौहीदी ने साबित बिन कुर्रा 221–288 हि0 के हवाले से हज़रत हसन बसरी रह0 की जामिईय्यत को इस तरह बयान किया है। वो अपने इल्म व तक़्वा, जोहद व वरआ इस्तग़ना व आली हिम्मती, लताफ़त, तफक्कुह और इल्म के ऐतबार से एक दरख़्शा सितारा थे उन की मजलिस में क़िस्म–क़िस्म के लोग जमा रहते थे और हर एक फ़ैज़ पाता था। एक शख़्स हदीस हासिल कर रहा है दूसरा तफ़सीर में

इस्तफादा कर रहा है तीसरा फ़िक्ह का दर्स ले रहा है, कोई फ़त्वा पूछ रहा है कोई मुक़दमात का फ़ैसला करने और क़ज़ा के क़वाइद सीख रहा है कोई वाज़ सुन रहा है और वो एक बहरे ज़ख़्ख़ार हैं जो मौज़ें ले रहा है और रौशन चिराग़ है जो मजसिल को पुर नूर कर रहा है फिर अम्र बिल्मारूफ़ और नही अनिल्मुन्कर के सिलसिले में उनके कारनामे और हुक्काम व ओमरा के रूबरू पूरी कूव्वत और सराहत के साथ इज़हारे हक़ के वाक़िआत भुलाने की चीज़ नहीं, वो मज़ीद कहते हैं कि हज़रत हसन बसरी रह0 बहुत गैरतमंद, ईमानी हमीयत से लबरेज़ और साहिबे हाल, शख़्सियत थे उनका शुमार आला दरजे के अहले इख़्लास में होता है। ज़बान व *बयान* की कूवत के साथ–साथ कूवते ईमानी में अपनी मिसाल आप थे जो कहते उस पर ईमान रखते और अपने ईमान पर हद दरजा एतमाद करते, उनके अल्फ़ाज़ दिल की गहराइयों से निकलते थे तो सीधे दिल में उतरते थे, सहाबा रज़ि0 या आखिरत का तज़्किरा होता तो लोगों की आंखें अश्क़बार हो जाती, दिल में जोश और दर्द पैदा होता, क्योंकि उन्हें ज़ौक़े ईमानी हासिल था और उनकी गुफ़्तगू उनके जज़्बात व एहसासात की तरजुमान थी उनकी गुफ़्तगू में मक़्नातीस की कशिश थी अहले दिल और अहले इख़्लास की गुफ़्तगू में ऐसी ही तासीर हुआ करती है।

हक़गोई व बेबाक़ी–

हज़रत हसन बसरी रह0 उन चंद अफ़राद में एक हैं जिन्होंने हज्जाज बिन युसूफ़ सकफी के मज़ालिम के खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द की और उसके ज़ुल्म व बर्बरीयत की खुले लफ़्ज़ों में मज़म्मत की और उसके रू बरू हक़ का ऐलान किया।

एक मौक़े पर हज्जाज बिन युसुफ ने वासित में एक घर बनाया था जब घर तामीर हो गया तो एक आम ऐलान किया गया लोग उसके घर आ कर ख़ैर व बरकत की दुआ करें, हज़रत हसन बसरी ने लोगों के उस जम्मे गफ़ीर के मौक़े को ज़ाया नहीं किया। वे खुद भी तशरीफ ले आए ताकि इस मौक़े पर दुनिया की बे सबाती, ज़ोहद की क़दर व क़ीमत और ज़िक्रे इलाही की अहमियत अलल ऐलान वाज़ेह कर सकें, हज़रत हसन बसरी जिस वक्त हज्जाज के मकान पर पहुंचे तो लोगों का एक ज़म्मे गफ़ीर उन्हें हज्जाज के आलीशान महल और उसके हुस्न व जमाल से मसहूर नज़र आया फ़ौरन ही उन्होंने एक तक़रीर की, तक़रीर के चन्द जुम्ले ये थे "हमने इससे ज़्यादा बड़ी इमारतें देखी हैं हमें मालूम है कि फिरऔन ने इससे ज़्यादा बेहतर और आलीशान इमारतें बनाई लेकिन अल्लाह तबारक व ताआला ने खुद उसे भी तबाह किया और उसकी इमारतें भी। काश हज्जाज को मालूम होता कि अहले आसमान उससे ख़ा[illegible] व नालां हैं और अहले [illegible] ने उसे किब्र व [illegible] मुब्तला कर [illegible] हिम्मत व ज[illegible] नाकि[illegible]

हत्ता की हाजिरीने मजलिस में एक शख़्स को हज्जाज के ज़ुल्म व बर्बरीयत के पेशे नज़र हज़रत हसन के तअल्लुक़ ख़ौफ व अन्देशा पैदा होने लगा तो उसने कहा अबू सईद बस करो, बस करो, हज़रत हसन बसरी रह0 ने उनके इस जवाब में फ़रमाया कि अहले इल्म ने अल्लाह से मुआहिदा किया है कि वो हक़ लोगों के सामने वाज़ेह करेंगे और इज़हार हक़ में कोताही नहीं करेंगे।

दूसरे दिन हज्जाज इंतिहाई ग़ैज़ व ग़ज़ब के आलम में मजलिस में हाज़िर हुआ और उसकी ज़बान से यह अल्फ़ाज़ निकले, अल्लाह तुम्हें ग़ारत करे, तुम्हारा नाम व निशान मिटा दे बसरा का एक गुलाम ज़ादा बरसरे मज़लिस हमें जो चाहता है कहता है और तुम में कोई ऐसा नहीं जो उसे रोक सके या उस पर नकीर कर सके बुज़दिलो! मैं उसके ख़ून से तुम्हें नहलाऊँगा और फिर उसने तलवार और चमड़े की चटाई मंगाई और जल्लाद को मजलिस में आने का हुक्म दिया बाज सिपाहियों को हुक्म दिया कि हज़रत हसन बसरी को गिरफ़्तार कर लाएं थोड़ी ही देर बाद हज़रत हसन बसरी पा ब ज़ोलां जाऐ जाते हैं ख़ौफ़ व दहशत से लोगों की निगाहें उनकी तरफ उठती हैं तलवार, जल्लाद और सामने सूली देख कर हज़रत हसन के होटों को जुम्बिश होती है। मोमिनाना रोब व जलाल और मोमिनाना शान व शौकत और 'दाइ आना' संजीदगी और वकार के साथ हज्जाज की तरफ नज़र उठाते हैं और चश्मे ज़दन में उनकी पुर असर और बा रोब शख़्सियत हज्जाज पर असर दिखाती हैं हज्जाज की ज़बान से ये अल्फ़ाज़ निकलते हैं कि अबू सईद यहां तशरीफ़ लाइए फिर क्या था लोगों की भीड़ छटती गई और हज्जाज इंतिहाई मरऊबियत और रोब व दहशत के आलम में उनका इस्तक़बाल करते हुए नज़र आया और अपनी कुर्सी पर उन्हें जा बिठाया हज़रत हसन जब अपनी जगह बैठ गए तो हज्जाज उनसे बाज़ दीनी उमूर के ताल्लुक से सवाल करने लगा और हज़रत हसन पूरी जुर्रत व हिम्मत सहर बयानी और वसी इल्म से उसके हर मसले का जवाब देने लगे हज्जाज ने कहा ऐ अबू सईद तुम उलमा के सरताज हो फिर उसने खुशबू मंगवाई और बतौर ताज़ीम उनकी दाढ़ी पर मली और उन्हें अलविदा कहा।

हज़रत हसन बसरी रह0 जब हज्जाज के पास से उठ कर बाहर आये तो उसका पहरेदार भी उनके साथ–साथ बाहर आया और कहा कि अबू सई! हज्जाज ने तुम्हें किसी और मक़सद से बुलाया था जिस वक़्त तुम आए मैंने तुम्हें देखा और आपने भी वो तलवार और असबाबे सूली देखे होंगे आपके होंटों को जुंबिश हुई थी, आपने क्या कहा? हज़रत हसन ने जवाब दिया कि मैंने दुआ की थी कि ऐ मेरे मुनइम व मोहसिन और मल्जा व मावा! हज्जाज के इंतिक़ाम को मेरे लिए मिस्ल ख़लील अ0 ठंडक और बाइसे सलामती बना दे। मुफक्किरे इस्लाम हज़रत

मौलाना अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 अपनी किताब तारीख दावतो अज़ीमत में रकम तराज हैं उनके मवाइज़ अपनी दिल आवेज़ी और दिल नशींनी के अलावा उस दौर की फसीह व बलीग़ ज़बान और आला अदब का नमूना हैं।

एक मुअस्सिर वाज़-

एक मौक़े पर अहले ज़माना पर तब्सरा, सहाबा-ए-किराम का तज़्किरा और इस्लामी अख़्लाक़ का नक़्शा ख़ींचते हुए फरमाते हैं हाए अफसोस! लोगों को उम्मीदों और ख़्याली मन्सूबों ने ग़ारत किया, ज़बानी बातें हैं अमल का नाम व निशान नहीं, इल्म है मगर (उसके तकाज़ों को पूरा करने के लिए) सब्र नही, ईमान है मगर यक़ीन से ख़ाली, आदमी बहुत नज़र आते हैं मगर दिमाग़ नायाब, आने जाने वालों का शोर है मगर एक बन्द-ए-खुदा ऐसा नज़र नहीं आता जिससे दिल लगे, लोग दाख़िल हुए और फिर निकल गए उन्होंने सब कुछ जान लिया फिर मुकर गए, उन्होंने पहले हराम किया फिर उसी को हलाल कर लिया तुम्हारा दीन क्या है? जबान का एक चटख़ारा! अगर पूछा जाता है क्या तुम रोज़े हिसाब पर यक़ीन रखते हो? तो जवाब मिलता है कि हाँ-हाँ कसम है रोज़े जज़ा के मालिक की, ग़लत कहा मोमिन की शान तो ये है कि वो कवी फिद्दीन हो, साहिबे ईमान व यक़ीन हो उसके इल्म के लिए हिल्म और उसके हिल्म के लिए इल्म बाइसे ज़ीनत हो, अक़्लमंद हो लेकिन नरम ख़ू उसकी खुशपोशी और ज़ब्त उसके फ़क्र व इफ़्लास की पर्देदारी करे दौलत हो तो एतदाल का दामन हाथ से न छूटने पाए खर्च करने में शफ़ीक़, खस्ता हालों के हक़ में रहीम व करीम, हुकूक़ की अदाएगी में कुशादा दस्त व फराख दिल, इंसाफ में सरगर्म व साबित क़दम, किसी से नफ़रत हो तो उसके हक़ में ज़्यादती न होने पाए न ऐब चीनी करता हो न तन्ज़ व इशारा न तान व तश्नी न ला यानी से उसको कुछ काम हो न लहो लइब से दिल चस्पी चुग़लखोरी नहीं करता जो उसका हक़ नहीं उसके पीछे नहीं पड़ता जो उस पर वाजिब आता है उसका इंकार नहीं करता माज़रत में हद से ज़्यादा नहीं बढ़ता दूसरे की मुसीबत में खुश नहीं होता दूसरे की मासियत से उसको मुसर्रत नहीं होती मोमिन को नमाज़ में खुशूअ़ और नमाज़ों का ज़ौक़ होता है उसका कलाम शिफा का प्याम, उसका सब्र व तक्वा उसका सुकूत सरासर ग़ौर व फिक्र उसकी नज़र सरापा दर्स व इबरत है उलमा की सोहबत अख़्तियार करता है, इल्म की ख़ातिर, ख़ामोश रहता है तो इसलिए कि गुनाहों और गिरिफ़्त से महफ़ूज़ रहे, बोलता है तो इसलिए कि कुछ सवाब कमाए और फायदा हासिल करे नेकी करके उसको खुशी होती है, गलती हो जाती है तो इस्तिग़फार करता है शिकायत करता है और उसके दिल में किसी की तरफ से रंज आता है तो माफी तलाफी कर लेता है, ज़ुल्म किया जाता है तो वह सब्र करता है कोई उसके

शेष पृष्ठ............... 19 पर

नाज़ुक दौर और वक़्त की पुकार

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

जिन मुसलमान वालिदैन को अपना दीन अज़ीज़ है और वह इस्लाम के लिए हर तरह की कुर्बानी और ईसार को अपने लिए फ़ख्र समझते हैं वह कभी भी इसको बरदाश्त नहीं कर सकते कि उनके बच्चे उनसे दूर रह कर ज़िन्दगी गुज़ारें। वह अपने बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत के लिए हर मुमकिन कोशिश करते हैं, बुरी सुहबत (संगत) से बचाने की फ़िक्र करते हैं उन को सच्ची और अच्छी बातें बताते हैं बुज़ुर्गों के वाक़ियात सुना सुना कर दीन का जज़्बा बेदार करने की कोशिश करते हैं और सख़्त से सख़्त हालात में मायूस नहीं होते हैं।

उन मुल्कों में जहां मुसलमानो का दीनी हैसियत से कोई निजाम काइम न था और उनके बच्चों की दीनी तालीम व तरबियत का कोई इन्तिज़ाम न था बल्कि हुकूमत की तरफ़ से जो तालीम दी जाती है वह मुसलमान बच्चों के लिए दीनी हैसियत से जहर (विष) से कम न थी। उस तालीम को हासिल करके मुसलमान बच्चा जो कुछ भी बनता मुसलमान और खुदा परस्त नहीं रह सकता था ऐसे नाज़ुक मौक़े पर दीन की तरबियत रखने वाले वालिदैन ने अपने बच्चों से गफ़लत नहीं की बल्कि उन की दीनी तालीम का कुछ इन्तिज़ाम किया, खुद वक्त निकाल कर उनकी ज़ेहनी तरबियत की और सरकारी तालीम के ज़हर से उनको बचा लिया और उनकी कोशिश से नस्लों की नस्लें इल्हाद और कुफ्र से बच निकलीं और सिर्फ़ इस्लाम पर काइम ही न रहे बल्कि उनमें बाज़ ऐसी शख़्सियतें पैदा हुईं जिनके हाथों पर हजारों इन्सान जो खुदा से रूठे हुए थे ताइब हुए। आज का दौर भी यही नजाकत लिए हुए है, हमारे मुल्क में जो सरकारी तालीम राइज़ है और जो निसाब स्कूलों में पढ़ाया जाता है वह भी अपने मवाद और अपनी तहरीरों के लिहाज़ से मुसलमान बच्चों को उनके दीने अज़ीज से दूर करने और शिर्क की तरफ़ खींचने वाला है, आप पूरे निसाब पर नज़र डालिए तो हज़ारों सफहात में ग़ैर इस्लामी कल्चर की तारीफ़ उसकी दावत व तल्क़ीन ही मिलेगी न मुसलमानों के बुज़ुर्गों का नाम मिलेगा न उनकी हिदायतों और कारनामों का तज़किरा मिलेगा, अगर कहीं कहीं कोई तज़किरा आ जाता है तो किसी तारीख़ी इमारत का या किसी बादशाह का।

नतीजा यह है कि मुसलमान बच्चों के मासूम दिमाग़ मुतअस्सिर होते हैं, स्कूल में वह पढ़ते हैं घरों पर उनको कोई दीन की बात बताता नहीं धीरे—धीरे अपने बुज़ुर्गों तक से ना वाकिफ हो जाते हैं वह अपने दीन से अव्वल तो ग़ाफिल होते हैं अगर जानते हैं तो सिर्फ

इतना कि हम मुसलमान हैं, लेकिन साथ याथ यह तअस्सुर भी दिमाग़ पर छाया होता है कि दीन ज़िन्दा नहीं और न हमारे यहां कोई बड़ा आदमी पैदा हुआ, स्कूलों की इस तालीम ने अपने खुले असरात पैदा करने शुरु कर दिये हैं।

ज़रूरी है कि मुसलमान वालिदैन अपनी औलाद पर निगाह रखें वह अपने बच्चों को ऐसे मदारिस में दाखिल करें, जहां आम किताबों के साथ–साथ दीनी किताबें भी दाखिल हों अगर ऐसा करना मुश्किल है तो जब बच्चा स्कूल से पढ़ कर आए तो उससे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछें और जो कुछ उसने अपने दीन के खिलाफ पढ़ा है उसके ज़हर (विष) से उसको बचाऐं। खारिज़ी औकात में उसको ऐसे उस्तादों के पास बैठाऐं जहां बैठ कर वह अपने दीन से वाकिफ और बाखबर हो सके।

इस सिलसिले में उन अहले इल्म हज़रात से हमारी गुज़ारिश है जिन को अल्लाह तआला ने दीन की समझ और जजबा जैसी नेमत से नवाजा है कि वक्त की इस पुकार को समझें और आज के नाज़ुक दौर के इस अहम मसअले को अपना मसअला बनाएं।

❖❖❖

हज़रत हसन बसरी ....

हक़ में नाइंसाफी करे तो वह इंसाफ को नहीं छोड़ता, अल्लाह तआला के सिवा किसी की पनाह नहीं लेता और उसके सिवा किसी से मदद नहीं चाहता मज्मे में बावक़ार, तन्हाई में शुक्रगुज़ार, रिज़्क पर काने, आराम व ऐश के ज़माने में शाकिर, मुसीबत और आज़माइश की घड़ियों में साबिर, ग़ाफिलों में ज़ाकिर, जाकिरों में हो तो इस्तिग्फ़ार में शागिल यह थी शान अस्हाबे रसूल सल्ल0 की अपने दरजों और मर्तबे के मुताबिक जब तक दुनिया में रहे उसी शान से रहे और जब दुनिया से गए तो इसी आन–बान से गऐ मुसलमानों! तुम्हारे सलफ सालिहीन का यह नमूना था जब तुमने अल्लाह के साथ अपना मामला बदल दिया तो अल्लाह ने भी तुम्हारे साथ अपना मामला बदल दिया (अल्लाह तआला किसी कौम की हालत में तग़य्युर नहीं करता जब तक कि लोग अपनी हालत को खुद नहीं बदल देते और जब अल्लाह तआला किसी क़ौम पर मुसीबत डालना तज़वीज़ करता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और कोई खुदा के सिवा उनका मददगार नहीं रहता) इमरान कसीर कहते हैं कि "मैंने हसन बसरी से एक मसला पूछा और मैंने कहा कि फुक़हा ऐसा कहते हैं" तो हज़रत हसन ने फरमाया कामिल फक़ीह वाक़ई तुमने देखा है? फक़ीह वह है जो दुनिया से बे रग़बत, दीन की सही बसीरत और इबादते खुदा वन्दी की मुदावमत करने वाला हो।

हज्म बिन अबी हज्म का क़ौल है कि मैंने हसन बसरी को कहते हुए सुना कि दो बहुत ही बदतरीन दोस्त हैं एक दीनार और दूसरा दिरहम, ज़िन्दगी भर वो तुम्हें कोई फायदा नहीं पहुंचा सकते। ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

भारतीय मुसलमानों की शादियों की कुछ स्थानीय परम्परायें तथा रीति रिवाज–

हिन्दुस्तानी मुसलमानों की शादियों में कुछ तत्व स्थानीय हैं जिन्होंने यहीं के मुसलमानों की विशेषता का रूप धारण कर लिया है और दूसरे देशों के मुसलमान इनसे अवगत नहीं, यथा—भारत के अनेक प्रान्तों में लड़के की ओर से मांगें होती हैं जिनकी पूर्ति करना बेटी वाले के लिए अनिवार्य होता है और जिनको कुछ स्थानों पर 'तिलक' की संज्ञा दी जाती है। स्वयं भारत में प्रत्येक स्थान पर इसका रिवाज नहीं, अरब या तुर्की के मुसलमानों को इसका समझाना भी मुश्किल है कि इसकी वास्तविकता क्या है, और इसका कोई नैतिक औचित्य हो सकता है? यहां इस विवाद का अवसर नहीं कि इससे लड़कियों को उचित वर मिलने और उनके माता पिता को इस उत्तरदायित्य की पूर्ति करने में किस प्रकार की कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हैं और उन्होंने जीवन को कितना कटु तथा शादी को कैसा अज़ाब बना दिया है[1]। इसी तरह से बेटी वालों की ओर से भोज का रिवाज़ जो एक अच्छा ख़ासा वलीमा मालूम होता है, दूसरे देशों में नहीं होता। इसी प्रकार बेटी की ओर से दिये हुए दहेज़ का प्रदर्शन और बारात के शहर में गश्त करने का (जो बहुत सी बिरादरियों की एक प्रथा है) भी दूसरे देशों में पता नहीं। इसके अतिरिक्त शादियों में मुँह दिखाई, सलाम कराई, न्योता, बहनोई साले का नाजुक रिश्ता और आपस का हंसी मज़ाक़, चौथी आदि के अतिरिक्त और बीसियों रसमें हैं, जो बहुत से हिन्दुस्तानी खानदानों में अभी तक प्रचलित हैं और जो हिन्दुस्तान के साथ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध हैं और सम्भवतः इस विश्वास पर आधारित हैं कि शादी एक उल्लास पूर्ण समारोह और मनोरंजन, हंसी मज़ाक़ और आनन्दित होने का शुभावसर है, जिसमें खानदान के लोग, निकट सम्बन्धी तथा मित्रगण जीवन की लगी बंधी परिपाटी तथा दैनिक जीवन के लगे बंधे चक्र से थोड़ी देर के लिए मुक्ति प्राप्त कर और किसी सीमा तक नैतिक बन्धनों एवं प्रतिबन्धों की उपेक्षा कर जीवन का आनन्द उठाते हैं। यह विचारधारा हिन्दुस्तान के स्वभाव एवं प्रवृत्ति से मेल खाती है, जो सदैव से आमोद प्रमोद का प्रेमी तथा रंगा रंगी एवं नूतनता, मेल मिलाप,

---

1. इन पंक्तियों के लिखते समय समाचार पत्रों में यह दुखद समाचार पढ़ने में आया कि बिहार प्रान्त के एक शहर 'गया' के मार्केटिंग अफ़र सय्यद मुहीउद्दीन ने इस बिना पर आत्म हत्या करली कि वह अपनी चार बेटियों के लिए लड़के वालों की ओर से की हुई मांग (तिलक) की फ़रमाइश पूरी करने में असमर्थ थे ("सिदक़ जदीद" 3 मार्च 1972 ई0)।

अनुकंपा तथा प्रफुल्लता का लालायित रहा है और जिसका प्रदर्शन, यहाँ के मेलों, त्योहारों तथा रस्मों में, किया गया है।

निकाह ख़्वानी की रसम और उसका तरीक़ा–

सामान्यतः निकाह की प्रक्रिया इस प्रकार क्रियांन्वित होती है कि दूल्हा नया जोड़ा पहन कर (जो आम तौर पर लड़की वालों की तरफ से आता है) महफ़िल में एक विशिष्ट एवं निर्धारित स्थान पर बैठता है। हिन्दुस्तान में बहुत जगह सेहरे और कंगने की भी रसम है जिस को शरीअत के पाबन्द मुसलमान पसन्द नहीं करते। निकाह पढ़ने की रसम कोई भी आलिम (धार्मिक विद्धान) या पढ़ा लिखा मुसलमान सम्पन्न करा सकता है। इसके लिए क़ाजी की शर्त नहीं, जिनकी व्यवस्था मुसलमान शासकों के शासन काल में पूरे देश में थी और जिनका एक आवश्यक तथा रुचिकर पद सम्बन्धी कर्त्तव्य निकाह पढ़ाना भी था। ज़्यादा उपयुक्त विधि (सुन्नत के अनुसार) यह है कि लड़की का बाप या कोई दूसरा वली[1] निकाह पढ़ाए, इसलिए हज़रत फ़ातिमा (पैग़म्बर साहब की सुपुत्री) का निकाह स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० के साथ पढ़ाया। इस समय दो गवाह और एक वली[2] लड़की के पास जा कर उसको सूचित करते हैं कि उसका निकाह अमुक व्यक्ति के साथ इतने महर पर किया जा रहा है। हिन्दुस्तान में इसका उत्तर साधारणतया मौन धारण करने से दिया जाता है और इस मौनावस्था को स्वीकृति तथा सहमति का समानार्थ समझा जाता है। यह गवाह और वकील सामान्यतः ख़ानदान के लोग और लड़की के निकट सम्बन्धी होते हैं। निकाह पढ़ाने वाला उसके बाद कुछ ऊँचे स्वर में क़ुरआन मजीद की आयतें, कुछ हदीसें और आशीर्वाद सम्बन्धी शब्द अरबी में कहता है, जिसको खुतब–ए–निकाह (विवाह से सम्बन्धित भाषण) कहते हैं। इसके बाद ईजाब कुबूल कराता है (अर्थात लड़के से स्वीकृति ली जाती है) जिसके सामान्य रूप से ये शब्द होते हैं कि, "मैंने अमुक सज्जन की लड़की, जिसका नाम यह है, को उनकी ओर से इतने महर पर दिया, तुमने कुबूल किया?" इस पर दूल्हा ऐसे स्वर में, जो निकट बैठे लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से सुन लिया जाय, कहता है कि, "मैंने कुबूल किया" फिर क़ाज़ी और सभा में उपस्थित जन प्रार्थना हेतु हाथ उठाते हैं और ख़ुदा से दुआ करते हैं कि लड़के तथा लड़की में पारस्परिक प्रेम हो, उनका गृहस्थ जीवन सफल तथा आनन्दमय ढंग से व्यतीत हो। यह ख़ुत्बा (भाषण) साधारणतः अरबी भाषा में पढ़ा जाता है।

---

1. फ़िक़्ह के अनुसार वली लड़की का वह रिश्तेदार है जो समझदार, बालिग़ तथा वारिस हो सकता हो और उसको शरीअत ने उस पर पूर्ण अधिकार दिया हो।
2. वकील वह व्यक्ति है जो किसी दूसरे के अधिकार में उसकी आज्ञा अथवा आदेशानुसार उप अधिकारी के समान हो।

❑❑

मिसाली अख़लाक़ कुर्आन व हदीस की रौशनी में

हिन्दी लिपिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

महब्बते इलाही—

दीन व दुनिया की सबसे बड़ी दौलत महब्बत और प्यार है, खास कर वह महब्बत और प्यार जो खुदा को अपने बन्दों के साथ हो, उस महब्बत और प्यार का जिक्र तो सब जगह पाया जाता है लेकिन उसके हासिल करने का ज़रिया क्या हो उसका जवाब कुर्आन ने दिया है कि "कह दो अगर तुम खुदा से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, खुदा तुमसे महब्बत करेगा"।

(आले इमरान—31)

इसलिए आप सल्ल0 की तालीमात, इरशादात, अहकाम, अख़्लाक़ व आमाल की पैरवी महब्बते इलाही का बड़ा जरिया है, और कुर्आन मजीद ने खास तौर से उन बुलन्द सिफात की निशानदही भी कर दी है जो महब्बते इलाही को अपनी तरफ खींचती है, ईमान, एहसान, तौबा, अल्लाह पर भरोसा, परहेजगारी, सब्र, पाकीज़गी और जिहाद (इनमें से हर एक का ज़िक्र आ रहा है) और इसी तरह उन सिफतों को खूब खोल कर बयान कर दिया है जो इंसान को महब्बते इलाही के लाभ से महरूम करती हैं, कुफ्र, बदगोई (यानी चुग़ली—गाली गलोज, झूठ, बुराई) बदला लेने में हद से आगे बढ़ जाना, गर्व, गुरूर, शेखी, खियानत, नाशुक्री, फसाद, बेजा खर्च, जुल्म, और गुनाह इन सिफात का ज़िक्र आगे आ रहा है।

तौबा—

यह वह कीमती तोहफा है जो इंसान के अंदर जिन्दगी व सरगर्मी और उम्मीद की लहर पैदा कर देता है और ना उम्मीदी के बादल छांट देता है अल्लाह तआला ने अपने नबियों और पैगम्बरों को इस वास्ते भेजा और अपनी किताबें इस लिए नाज़िल फरमाई कि इन्सानों को अपना बुरा—भला और गुनाह सवाब सब मालूम हो जाये, तो जिन लोगों ने अल्लाह के रसूलों, उसकी नाज़िल की हुई किताबों को नहीं माना और ईमान नहीं लाये और खास कर उस आखिरी जमाने के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और उनकी लाई हुई खुदा की आखिरी किताब कुर्आन मजीद पर ईमान न लाये और उसकी हिदायत को तस्लीम नहीं किया वह अल्लाह की रजामंदी और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में कामयाबी व नजात हासिल नहीं कर सकते क्योंकि अल्लाह का और उसके नबियों और उसकी किताबों का इंकार ऐसा जुर्म है जो क़ाबिले मुआफी नहीं है, हर पैगम्बर ने अपने अपने दौर में इस बात का साफ एलान किया है, बहर लाह कुफ्र और शिर्क वालों की नजात के लिए ज़रूरी है कि वह सबसे पहले शिर्क व कुफ्र से तौबा करें और ईमान व तौहीद को अपना आचरण बनायें, उसके बगैर नजात मुम्किन नहीं लेकिन जो लोग रसूलों पर ईमान ले आये हैं और

उनकी हिदायत पर चलने का इक़रार और इरादा कर लेते हैं वह भी कभी कभी शैतान के बहकाने से या अपने दिल की बुरी ख़्वाहिश से गुनाह के काम कर बैठते हैं, ऐसे सब गुनहगारों के लिए अल्लाह ने तौबा व इस्तिग़फ़ार का दरवाज़ा खुला रखा है।

तौबा व इस्तिगफ़ार का मतलब यह है कि जब बन्दे से अल्लाह की नाफरमानी और गुनाह का कोई काम हो जाये तो वह उस पर नादिम व शर्मिंदा हो और भविष्य में उस गुनाह से बचने का इरादा कर ले और अल्लाह से अपने किये हुए गुनाह की मुआफी चाहे, ऐसा करने से अल्लाह अपने बन्दे से राज़ी हो जाता है और उसके गुनाह मुआफ कर दिया जाता है याद रखना चाहिए कि तौबा सिर्फ ज़ुबान से नहीं होती बल्कि किये हुए गुनाह पर दिल से नदामत और रंज व अफ्सोस होना ज़रूरी और भविष्य में फिर कभी उस गुनाह के न करने का इरादा भी दिल से होना अनिवार्य है।

अल्लाह तआला का इरशाद है "ऐ ईमान वालो! तौबा करो अल्लाह से सच्ची तौबा उम्मीद है कि तुम्हारा मालिक (इस तौबा के बाद) मिटा देगा तुम्हारे गुनाह और दाखिल कर देगा तुम को जन्नत के उन बाग़ीचों में जिनके नीचे नहरें जारी हैं।

(सूर–ए–तहरीम:8)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में इरशाद फरमाया है "जिसका एक जुज्व (अंश) यह है कि अल्लाह तआला इरशाद फरमाते हैं कि ऐ मेरे बन्दों तुम रात दिन गल्तियाँ और दोष करते हो और मैं सब गुनाह मुआफ कर सकता हूं इसलिए तुम मुझ से मुआफी और बख़्शिश मांगो मैं तुम्हें मुआफ कर दूंगा (मुस्लिम)"।

एक दूसरी जगह इरशाद फरमाया "गुनाह से तौबा करने वाला बिलकुल उस आदमी की तरह हो जाता है जिसने वह गुनाह किया ही न हो" (सुनने इब्ने माजा)

तौबा व इस्तिग़फ़ार के मुतअल्लिक कुर्आन व हदीस में सैकड़ों इरशादात हैं जिनका समेटना व बयान मुम्किन नहीं।

तवक्कुल (भरोसा) करना–

यह हकीकत है कि सारी दुनिया में जो कुछ होता है और जिस को जो कुछ मिलता है या नहीं मिलता है सब सीधे अल्लाह तआला के हुक्म व फैसले से होता है, इस हक़ीक़त पर दिल से यकीन करके अपने तमाम मकासिद और कामों में सिर्फ अल्लाह तआला की जात पर ऐतमाद व भरोसा करना, उससे लौ लगाना, उसका ध्यान जमाना, उसकी कुदरत और करम पर नज़र रखना तवक्कुल कहलाता है। जाहिरी चीज़ों और उपायों को छोड़ देना तवक्कुल के लिए ज़रूरी नहीं, हज़राते अंबिया किराम और खास तौर से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हर दौर के आरिफीने कामिलीन (बड़े–बड़े ज्ञानी) इस दुनिया के अस्बाबी सिलसिले को अल्लाह तआला के हुक्म के अधीन और उसकी हिक्मत की मंशा को जानते हुए आम हालात में

चीजों का भी इस्तेमाल करते थे, लेकिन दिल का ऐतेमाद और भरोसा सिर्फ अल्ला ही पर होता था।

अल्लाह तआला का इरशाद है ''कह दीजिए मेरे लिए अल्लाह ही काफी है, उसी पर भरोसा करते हैं भरोसा करने वाले'' (सूर–ए–जुमर–38) दूसरी जगह अल्लाह का इरशाद है ''फिर जब आप पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा कीजिए, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को पसंद फरमाता है (आले इमरान–159) हमारा रब हर चीज़ को अपने इल्म से घेरे हुए है, अल्लाह ही पर हमने भरोसा किया है (सूर–ए–आराफ: 89) और हम अल्लाह पर भरोसा क्यों न करें जबकि उसी ने हमें हमारा रास्ता दिखाया है।

(सूर–ए– इब्राहीम:12)

और जो भरोसा करे अल्लाह पर वही उसके लिए काफी है (सूर–ए–तलाक़:3) इस तरह तवक्कुल की अनगिनत आयात हैं अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशादात मुलाहज़ा फरमाइये ''हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बेगैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे, वह वह बन्दगाने खुदा होंगे जो जादू टोना नहीं करते और बुरा फाल नहीं लेते और अपने पालन हार पर तवक्कुल करते हैं।

(बुख़ारी)।

हज़रत उमर रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते थे अगर तुम लोग अल्लाह पर ऐसा तवक्कुल और ऐतेमाद करो जैसा कि उस पर तवक्कुल करने का हक़ है तो तुमको इस तरह रोज़ी दे जिस तरह परिन्दों को देता है, वह सुब्ह को भूखे अपने घोंसलों से निकलते हैं और शाम को पेट भर कर वापस आते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि0 ने इरशाद फरमाया ''ऐ लोगो! नहीं है कोई चीज़ ऐसी जो जन्नत से तुम को करीब और दोज़ख़ से तुम को दूर करे मगर इसका हुक्म मैं तुम को दे चुका हूँ और इसी तरह नहीं है कोई चीज़ ऐसी जो तुम को दोज़ख़ के करीब और जन्नत से दूर करे मगर मैं तुम को उससे मना कर चुका हूँ'' एक और रिवायत में हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अभी मेरे दिल में ये बात डाली है कि कोई जानदार उस समय तक नहीं मरता जब तक अपना रिज़्क पूरा न कर ले, अतः ऐ लोगो! अल्लाह से डरो और रोज़ी की तलाश के सिलसिले में नेकी और परहेज़गारी का रवैया चुनों और रोज़ी–रोटी में कुछ देर हो जाना तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम अल्लाह की नाफरमानियों और नाजायज़ तरीकों से उसको हासिल करने की चिन्ता व प्रयास करने लगो क्यों कि जो कुछ अल्लाह के कब्ज़े में है वह उसके फरमाँ बरदारी और इताअत गुज़ारी ही के जरिये हासिल किया जा सकता है। ❑❑

प्यारे नबी सल्ल0 के दुनिया में तशरीफ़ लाने का बयान

—फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

जिसकी बेसत पाक पर
रब ने जताया है एहसाँ
उसकी आमद पाक का
होता है याँ बयाँ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हमारे आक़ा और अल्लाह तआला के आख़िरी और महबूब तरीन रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत बा सआदत 8 रबीउल अव्वल या 9 रबीउल अव्वल या मशहूरे आम क़ौल के मुताबिक़ 12 रबीउल अव्वल दोशम्बे के रोज़ सुब्ह सादिक़ के वक़्त मक्का मुकर्रमा में हुई, अंग्रेज़ी तारीख़ 20 अप्रैल सन् 571 लिखी गई है, आपकी वालिदा माजिदा का नाम आमिना था, वालिदे मुकर्रम का इसमें गिरामी अब्दुल्लाह था जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत से पहले ही वफ़ात पा चुके थे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत के वक़्त के बाज़ अजीब व ग़रीब वाक़िआत लोगों से मालूम हुए जो सीरत की किताबों में दर्ज हैं, जैसे बाज़ जानवरों ने इन्सानी ज़बान में आप की पैदाइश की खुशख़बरी दी, बाज़ दरख़्तों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की ख़बर सुनी गई, बाज़ बुत परस्तों ने बयान किया कि उन्होंने बाज़ बुतों से आपकी पैदाइश की खुशख़बरी सुनी इसी तरह और भी बहुत सी बातें मशहूर हैं।

कितनी खुश किस्मत थीं क़बीला बनी सअ़द की हलीमा सअ़दिया रज़ि0 कि उनको हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूध पिलाने का शरफ़ हासिल हुआ, 6 साल की उम्र में वालिदा माजिदा हज़रत आमिना वफ़ात पा गईं। आठ साल के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब का भी इन्तिक़ाल हो गया, अब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न किसी से लिखना पढ़ना सीखा न किसी से कोई हुनर हासिल किया, इसीलिए उम्मी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लक़ब हुआ, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जवान हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तिजारत भी की है, मक्का मुकर्रमा की शरीफ़ तरीन रईस ख़ातून हज़रत ख़दीजा रज़ि0 की शिरकत में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तिजारत की, इस तरह कि पैसा हज़रत ख़दीजा रज़ि0 का और मेहनत आप की, हज़रत ख़दीजा रज़ि0 बेवा थीं, उनको कई लोगों ने पैग़ाम दिया था मगर उन्होंने इन्कार कर दिया था, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मआ़मलात और अख़लाक़ से ऐसी मुतअस्सिर हुईं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ुद से पैग़ाम दे दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पैग़ाम क़बूल किया और निकाह हो गया, उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र 25 साल थी और हज़रत ख़दीज़ा रज़ि0 की उम्र चालीस साल थी।

जब आप चालीस साल के हो गये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही उतरने का सिलसिला शुरु हुआ, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाना शुरु किया अल्लाह के मुक़र्रब तरीन फरिश्ते हज़रत जिब्राईल अ0 अल्लाह तआला की तरफ़ से वही ला कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (यानी अल्लाह के आख़री और मुकर्रब तरीन रसूल) को पहुंचाते थे यह वही अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से बाज़ सहाबा लिख भी लेते थे और ज़बानी याद भी कर लेते थे, उधर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी वह वही याद हो जाती थी, उसी को कुर्आन कहते हैं जो 23 साल में मुकम्मल हुआ जो किताब कि शक्ल में लिख लिया गया और साथ ही साथ सीनों में महफ़ूज़ कर लिया गया।

कुर्आन मजीद अरबी ज़बान में है जिसमें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के लिए अहकाम भेजे हैं। कुर्आन मजीद में बहुत से सबक़ आमोज़ क़िस्से भी हैं और आख़िरत की चीज़ों का बयान भी है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुर्आन मजीद के अहकाम सहाब–ए–किराम को समझा दिये और ख़ुद उन पर चल कर दिखा भी दिया, कुर्आन मजीद की बातों को समझाने में या आख़िरत की ख़बरों को खोल कर बयान करने में, ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े की तफ़सील बयान करने में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो अमल करके दिखाया या जो बातें बताईं उनको हदीस कहते हैं जिन को सहाब–ए–किराम ने ज़बानी याद भी कर लिया था और अपने तौर पर लिख भी लिया था, अहादीस का मुआमला कुर्आन जैसा नहीं है, कुर्आन मजीद तो क़िराअत के इख़्तिलाफ़ात को छोड़ कर सबके पास यकसां था लेकिन हदीस की एक बात किसी ने सुनी तो दूसरे ने नहीं सुनी, एक सहाबी रज़ि0 को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बात बताई तो दूसरे सहाबी रज़ि0 को हसबे मौक़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ बढ़ा कर बताया लिहाज़ा अहादीस के मजमूए मुतअदिद हो गये और एक ही मज़मून में रिवायात भी मुख़्तलिफ हो गईं बाद में कुछ साज़िशी लोगों और कुछ इस्लाम से हमदर्दी रखने वालों ने ऐसी बातें भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मनसूब करके बता दीं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं बताई थीं लेकिन अल्लाह तआला ने उलम–ए–किराम को तौफ़ीक़ दी, उन्होंने साज़िशों को नाकाम बनाया और दूध का दूध और पानी का पानी कर के दिखाया, अलग़रज़ जो बातें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताईं और कुर्आन शरीफ़ जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरा, इस कुर्आन और हदीस की सारी बातों को मान लेने ही का नाम ईमान है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 23 साल तक दीन की तबलीग़ की और इस राह में बड़े–बड़े इम्तिहानात आए, मगर अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साबित क़दम

रखा, अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बेशुमार मोजिज़े अता फरमाए, जब अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्लाम मुकम्मल तौर पर बन्दों तक पहुंच गया तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया वालों पर परदा फ़रमाने का हुक्म दे दिया। इस तरह 63 साल की उम्र में 12 रबीउल अव्वल 11 हिज्री दोशम्बा को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अतहर पर मौत तारी हुई सहाब–ए–किराम रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गुस्ल देकर हज़रत आइशा रज़ि0 के कमरे में कफ़न पहना कर फ़रदन–फरदन नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और वहीं दफन कर दिया, सहाब–ए– किराम को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई का इतना ग़म हुआ कि किसी ग़म से मुक़ाबला नहीं हो सकता। शायद इसमें यह मसलहत हो कि ईमान वाले इस दिन को याद करके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत के दिन बेजा ख़ुशियां न मनाएं, बेशक सहाब–ए–किराम ने आप को दफ़न फ़रमा दिया लेकिन क़ब्रे अक़दस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ख़ास ज़िन्दगी अता हुई जिस का समझना हमारी अ़क्ल का काम नहीं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हम पर इतना एहसान है कि उस का बदल किसी तरह नहीं कर सकते, सिवाए इसके कि हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त करें और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम की कसरत करें।

सलाम उस पर की जिसने बेकसों की दस्तगीरी की
सलाम उस पर कि जिसने बादशाही में फ़क़ीरी की
सलाम उस पर कि असरारे महब्बत जिसने समझाए
सलाम उस पर कि जिसने ज़ख़्म खा कर फूल बरसाए
दुरूद उस पर कि जिस का नाम तस्कीने दिलो जाँ है
दुरूद उस पर कि जिस के ख़ुल्क़ की तफ़्सीर क़ुर्आं है।

रौज़-ए-अनवर पर अरबी सलाम के बाद

या नबीये मुस्तफ़ा, आप पर लाखों सलाम
या हबीबे किबरिया, आप पर लाखों सलाम
रब ने बख़्शे आपको, बेशक हज़ारों मोजिज़ात
आप हैं ख़ैरुल वरा, आप पर लाखों सलाम
कंकरियों ने पढ़ा था, कल्म–ए–हक़ आप का
आप हैं नूरुल हुदा, आप पर लाखों सलाम
रब की हरदम रहमतें, हैं उतरती आप पर
रहमतें आलम हैं आप, आप पर लाखों सलाम
अ़क्ल थी आजिज़ मेरी, रास्ता मिलता न था
पकड़ा दामन आपका, आप पर लाखों सलाम

मोजिज़ात=मुअ़जिज़ात

मक़्क़ा और मदीना में बाहम अफ़ज़लीयत

—इदारा

तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि मदीना मुनव्वरा का वह मुक़द्दस हिस्सा जो जिस्मे अतहर नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुत्तसिल है तमाम मक़ामात से अफ़ज़ल है यहां तक कि काबा बल्कि अर्शे अज़ीम से भी अब इसके बाद इख़्तिलाफ़ है कि आया मक्का अफ़ज़ल है या मदीना, सही यह है कि काबा को छोड़ कर मक्का के बाक़ी हिस्से पर मदीने का बाकी हिस्सा अफ़ज़ल है, हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ि0 और सहाबा रज़ि0 का यही मसलक है, अहादीसे सहीहा से भी इसी मसलक की ताईद होती है, उलमा–ए–मुहक्क़िक़ीन ने इसी को इख़्तियार किया है–

इमाम मालिक रह0 अपने मुअत्ता में रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि0 ने बतौर जज़र व इनकार के अब्दुल्लाह बिन अब्बास मख़ज़ूमी से कहा कि क्या तुम यह कहते हो कि मक्का, मदीना से अफ़ज़ल है उन्होंने कहा कि मक्का ख़ुदा का हरम है और वहां उसका घर है इस वजह से मैं उसको अफ़ज़ल कहता हूँ, हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा के हरम और उसके घर की निसबत कुछ नहीं कहता फ़िर फ़रमाया कि क्या तुम यह कहते हो कि मक्का मदीना से अफ़ज़ल है उन्होंने फिर वही कहा कि मक्का ख़ुदा का हरम है और वहां उसका घर है, हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि मैं ख़ुदा के हरम और उसके घर की निसबत कुछ नहीं कहता, कई बार हज़रत उमर रज़ि0 ने इस कलाम की तकरार फ़रमाई और चले गये मालूम हुआ कि हज़रत उमर रज़ि0 ख़ाने काबा को मुसतसना करके मदीना को मक्का से अफ़ज़ल कहते थे, और यही हक़ है।

इल्मुल फ़िक़्ह जि0 5 पेज0 85 (मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर फारूकी रह0)

यह मसअला इजमाई है कि मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा तमाम बिलाद से अफ़ज़ल हैं, मगर इसमें इख़्तिलाफ है कि इन दोनों में कौन अफज़ल है। हंमारे नज़दीक मक्का मुकर्रमा, मदीना मुनव्वरा से अफज़ल है यही मजहब इमामे शाफई रह0 और इमामे अहमद रह0 का है, इमामे मालिक रह0 के नज़दीक मदीना मुनव्वरा अफज़ल है लेकिन यह इख़्तिलाफ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मरकदे मुबारक के मा सिवा में है, जमीन का वह हिस्सा जो सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जसदे अतहर से मिला हुआ है वह बिलइत्तिफ़ाक़ तमाम से अफज़ल है हत्ता कि मस्जिदे हराम व काबा, अर्श व कुर्सी से भी अफ़ज़ल है।

(मुअल्लिमुल हुज्जाज पे0 310)
द्वारा कारी सईद अहमद साहिब साबिक मुफ़्ती मज़ाहिरे उलूम सहारनपुर।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः मेरे घर में बकरी ने बच्चा जना वह 10 जिलहिज्ज 1434 हि0 से पहले एक साल का हो रहा था मगर उसके पैदाइशी तौर पर सींग न थे, मैंने एक आलिम से पूछा उन्होंने फरमाया उसकी कुर्बानी जाइज़ है लिहाज़ा मैंने कुर्बानी कर दी बाद में एक साहब ने बताया कि सच्चा राही अक्तूबर 2013 पेज 29 पर लिखा है कि जिस जानवर के पैदाइशी सींग न हों उसकी कुर्बानी न होगी इस बात से मुझे तश्वीश हुई लिहाजा मुझे मुतमइन फरमाऐं।

उत्तरः आप तशवीश में मुब्तला न हों आपकी कुर्बानी हो गई अल्लाह क़बूल फरमाए, जिस जानवर के पैदाइशी सींग न हो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है। सच्चा राही में यह मसअला ग़लत छप गया है, अल्लाह तआला मुआफ फरमाए। अल्लाह तआला आपको जजाए ख़ैर अता फरमाए कि आपके सवाल से हमारे पाठकों के सामने सही बात आ गई।

प्रश्नः हाशिम कौन थे जिन की औलाद बनी हाशिम कहलाती है?

उत्तरः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पर दादा का नाम हाशिम था आपकी नस्ल का सिलसिला इस तरह है, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मुनाफ।

प्रश्नः इस बात की क्या दलील है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आख़िरी नबी हैं और आपके बाद कोई नबी नहीं आयेगा?

उत्तरः पहली बात यह है कि कुर्आन मजीद में आपको खातमुन्नबीयीन यानी आखरी नबी बताया गया है दूसरी बात यह है कि खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अना खातिमुन्नबीयीन व ला नबीय बअ़दी" यानी मैं आखरी नबी हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं। तीसरी बात यह कि अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में फरमाया है "अलयोम अकमल्तु लकुम दीनकुम व अतमम्तु अ़लैकुम निअ़मती व रज़ीतु लकुमुल इस्लाम दीना" (सूर–ए–माइदहः 3) यानी आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेअ़मत तुम्हारी ऊपर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम पसन्द किया।

इससे साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिये से अल्लाह तआला ने दीन की तक्मील कर दी और इस्लाम हमेशा के लिए कामिल व मुकम्मल हो गया इसलिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद किसी पैग़म्बर के आने की ज़रूरत ही नहीं है।

प्रश्नः इस बात की क्या दलील है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम पैग़म्बरों में रुत्बे में बड़े हैं?

उत्तरः हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तमाम पैग़म्बरों से अफ़ज़ल होना कुर्आन मजीद की कई आयतों से

मालूम होता है और खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अना सय्यिदु वुल्दि आदम योमल क़ियामति" यानी मैं कियामत के दिन तमाम औलादे आदम का सरदार हूँगा। और ज़ाहिर है कि औलादे आदम में तमाम पैग़म्बर अलैहिस्सलाम भी दाखिल हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम पैग़म्बरों से अफ़्ज़ल और उनके सरदार हुए।

प्रश्नः मुअ़जिज़ा किसे कहते हैं?

उत्तरः अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों से कभी ऐसी ख़िलाफे आदत बातें जाहिर करादेता है जिनके करने से दुनिया के और लोग आ़जिज़ होते हैं ताकि लोग ऐसी बातों को देख कर समझ लें कि यह खुदा के भेजे हुए पैग़म्बर हैं ऐसी बातों को मुअजिज़ा कहते हैं।

प्रश्नः मेराज किसे कहते हैं?

उत्तरः अल्लाह तआला के हुक्म से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रात जागते में बुराक पर सवार हो कर मक्क़ा मुकर्रमा से बैतुल मुकद्दस तक फिर वहां से सातों आसमानों के ऊपर जहां तक अल्लाह तआला को मन्ज़ूर था वहां तक तशरीफ ले गये उसी रात जन्नत की सैर की और जहन्नम का मन्ज़र देखा फिर मकान पर रात ही में वापस आ गये इसी को मेराज कहते हैं। इस का कुछ बयान कुर्आन मजीद में है यहां बहुत मुख़्तसर जवाब दिया गया।

प्रश्नः करामत किसे कहते हैं?

उत्तरः अल्लाह के नबी की पैरवी करने वाले बाज नेक बन्दों की इज़्ज़त बढ़ाने के लिए अल्लाह तआला कभी–कभी उनके ज़रिए से ऐसी खिलाफ आदत बातें जाहिर कर देता है जिसे दूसरे लोग नहीं कर सकते उन बातों को करामात कहते हैं नेक बन्दों और औलिया उल्लाह से करामतों का ज़ाहिर होना हक़ है।

प्रश्नः बाज़ खिलाफे शरअ़ फकीरों से ऐसी खिलाफ आदत बातें ज़ाहिर होती हैं जिनको दूसरे लोग नहीं कर सकते उन्हें क्या समझना चाहिए?

उत्तरः ऐसे लोगों से जो खिलाफ शरअ़ काम करते हैं उनसे अगर कोई खिलाफ आदत बात ज़ाहिर हो तो समझें कि वह जादू या इस्तिदराज है करामत हरगिज़ नहीं हो सकती ऐसे लोगों को अल्लाह का वली समझना और उनकी खिलाफे आदत बातों को करामत समझना शैतानी धोखा है।

प्रश्नः सहाबी किसे कहते हैं?

उत्तरः सहाबी उस शख़्स को कहते हैं जिसने ईमान की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा हो या आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो और ईमान पर उसकी वफ़ात हुई हो।

प्रश्नः सहाबा में सबसे अफ़्ज़ल सहाबी कौन हैं?

उत्तरः तमाम सहाबा में 4 सहाबी सबसे अफ़्ज़ल हैं अव्वल हज़रत अबू बक्र रज़ि0 तो तमाम उम्मत से अफ़्ज़ल हैं। दूसरे हज़रत उमर फारूक़ रज़ि0 जो हज़रत अबू बक्र के सिवा तमाम उम्मत से अफ़्ज़ल हैं। तीसरे हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 जो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत

शेष पृष्ठ............. 35 पर

लोकतंत्र दिवस

—मो0 फरमान नदवी

भूमिका-

भारत एक बहु धार्मिक तथा बहु सांस्कृतिक विशाल देश है। यहां के पुरातन निवासी कोल भील और द्रावड़ हैं यहां की उपजाऊ हरी भरी धरती विचित्र नदियों, पहाड़ों तथा बहुमूल्य जंगलों वाली भूमि सदैव बाहर वालों को लुभाती रही है अतएव यहाँ बाहर से आर्य आए और अपनी संस्कृति तथा ज्ञान के साथ पूरे देश पर छा गये आठवीं शताब्दी ई0 के आरम्भ में यहाँ मुसलमान आना आरम्भ हुए वह नया धर्म, नई सभ्यता और नई संस्कृति लाए, देश ने उनका स्वागत किया, वह यहां के शासक बने और अपने स्वभाव तथा न्याय से यहां के चहीते बन गये उन्होंने यहाँ 500 वर्षों तक अच्छा शासन चलाया, फिर यहाँ व्यापार के बहाने अंग्रेज़ आए जब मुस्लिम शासक भोग विलास में पड़ गये तो वह व्यापारी चालाकी से शासक बन बैठे और यहां का धन लूट—लूट कर अपने देश ब्रिटेन भेजने लगे। देश के बुद्धजीवियों तथा नेताओं को यह बात बहुत दुख पहुंचा रही थी। उन्होंने भारत की स्वतंत्रा का प्रयास आरम्भ किया और हिन्दू, मुस्लिम, सिख सबने एक जुट होकर सत्याग्रह युद्ध छेड़ा और बड़ी कठिनाइयों तथा कष्टों को सहन करते हुए एक लम्बे समय के पश्चात 14—15 अगस्त सन् 1947 ई0 के बीच की रात में अंग्रेज़ों को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया। इस प्रकार 15 अगस्त 1947 ई0 को भारत स्वतंत्र हो गया।

भारत में अब तक राज तंत्र शासन व्यवस्था रही अब यहां लोकतंत्र शासन व्यवस्था स्थापित करना थी परन्तु इस व्यवस्था के लिए देश के पास अपना कोई विधान न था। अतः कुछ दिनों तक ब्रिटिश विधान से काम लिया गया।

शासन व्यवस्थाएं

तीन शासन व्यवस्थाएं प्रसिद्ध हैं।

1. **राज तंत्र**— वह शासन प्रणाली जिसमें राज का सारा प्रबन्ध केवल राजा के हाथ में हो और जिस के प्रबन्ध करने में प्रजा या उसके प्रतिनिधियों का कोई स्थान न हो।

2. **परामर्शिक शासन व्यवस्था (शूराई निजाम)**— यह वह व्यवस्था शरीअते इस्लामी की देन है इसमें विधान केवल अल्लाह का होता है इसको चलाने के लिए संयमी विद्वानों, धर्म गुरुओं और बुद्धिजीवियों की एक समिति (शूरा) होती है जो इस व्यवस्था को चलाने में इस्लामी शासक (अमीर) को सहयोग देती है।

3. **लोक तंत्र**— वह शासन प्रणाली जिसमें प्रमुख सत्ता लोक या जनता अथवा उसके चुने हुए प्रतिनिधियों या अधिकारियों के हाथ में होती है और जिसकी नीति आदि निर्धारित करने का सब लोगों को समान रूप से अधिकार होता है। लोकतंत्र को प्रजातंत्र और गणतंत्र भी कहते हैं।

लोकतंत्र की व्याख्या यूँ भी करते हैं जनता का राज्य जनता के लिए जनता द्वारा। संसार में यह व्यवस्था लोक

प्रिय है, और सांसारिक प्रबन्ध के लिए इस व्यवस्था को बहुत अच्छा समझा जाता है, स्वतंत्रता के पश्चात यही शासन प्रणाली अपने देश में भी अपनाई है।

ऊपर बताया जा चुका है कि लोकतंत्र चलाने के लिए भारत के पास कोई विधान न था अतः तै पाया कि जब तक अपना विधान तैयार हो ब्रिटिश विधान से काम चलाया जाये अतएव यही हुआ कि ब्रिटिश विधान चालू कर दिया गया। और यहां के बुद्धिजीवी, बड़े विद्वान, नेताओं ने डाक्टर अम्बेडकर के नेतृत्व में बड़ी लगन और मेहनत के साथ विधान बनाने का काम आरम्भ कर दिया और तीन वर्षों में भारत का विधान तैयार हो गया और 26 जनवरी 1950 को नेताओं की सभा में उसका उद्घाटन हुआ। पूरे देश में उस दिन खुशियां मनाई गयी। यह लोकतंत्र दिवस का पहला दिन था। तब से हर वर्ष यह दिवस बड़ी खुशी के साथ मनाया जाता है। तिरंगा फहराया जाता है, राष्ट्रगान गाया जाता है। मिठाईयां बटती हैं, खुशियां मनाई जाती हैं। यह लोकतंत्र दिवस समारोह हर भारतीय नागरिक के लिए अनिवार्य है।

भारतीय संविधान की विशेषताऐं-

1. व्यापक तथा विस्तृत विधान।
2. आवश्यकतानुसार लचकदार।
3. सेकुलर (धर्म निर्पेक्ष) अर्थात शासन का कोई धर्म न हो परन्तु हर धर्म और धर्मो को उसका अधिकार मिले।
4. सांसदीय शासन प्रणाली।
5. संयुक्त शासन व्यवस्था। अर्थात आवश्यकतानुसार देश को राज्यों में विभाजित करके उन सबको केन्द्र से जोड़ कर शासन चलाना।
6. मौलिक अधिकार।
7. स्वतंत्र न्याय विभाग।
8. तार्किक प्रवृत्ति।
9. एकल नागरिकता।

लोकतंत्र के तत्व-

किसी भी वस्तु के बाकी रहने के लिए उसके विभिन्न तत्व होते हैं, यह तत्व उसको दृढ़ता प्रदान करते हैं तथा उसको शक्ति देते हैं, यह तत्व निम्न लिखित हैं–

1. शासन
2. विधान सभा
3. न्याय विभाग
4. मीडिया

यह लोकतंत्र का संक्षिप्त परिचय है भारत का लोकतंत्र इन्हीं नियमों का प्रतिबन्ध है इसमें रंग, वंश, धर्म, जातपात तथा निवास स्थान की बिना पर विभाजन से रोका गया है। अतः हर भारत वासी का नैतिक ही नहीं अतिपु वैधानिक करतव्य है कि वह इन नियमों का पालन करे यही लोकतंत्र दिवस का संदेश है।

(लोक तंत्र दिवस)

लोकतंत्र का दिवस मनाओ
झण्डा ऊँचा तुम फहराओ
कर के तिरंगा ऊँचा अपना
गीत क़ौम का मन से गाओ
लोक तंत्र का अर्थ बता कर
प्रेम भाव को खूब बढ़ाओ
सबको बुला कर एक मंच पर
एक रहो का सबक़ पढ़ाओ
जय कारा की धूम मचा कर
फिर सब हल्वा पूड़ी खाओ
बटें मिठाई बच्चों में फिर
कुछ लडडू घर को ले जाओ
प्यार देश से करें सभी जन
गली गली में गान यह गाओ
लोगतंत्र का दिवस मनाओ
रब के अपने गुन तुम गाओ

दुरूद व सलाम

—मौ0 मुहम्मद सानी हसनी रह0

वह रिसालत मआब और शहे दो जहाँ
पाक नाम आप का ले ये गन्दी जुबाँ
है मजाल इस की क्या और जुरअत कहाँ
इक ख़्याल आ गया और आँसू रवाँ
सय्यिदे वुल्दे आदम वह ख़ैरुल अनाम
उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

वो क्या जौहरे फ़र्द पैदा हुआ
सारे आलम में फैली है उसकी ज़िया
गुनगुनाने लगे है ये अ़र्जो समा
आ गया जाने कौनो मकाँ आ गया
कह उठे यक जुबाँ रात दिन सुब्हो शाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

आमिना का वो प्यारा वो दुर्रे यतीम
बेकसों का सहारा वो लुत्फ़े अ़मीम
सब की आँखों का तारा वो ज़ाते करीम
जानो दिल माह पारा वो ख़ुल्क़े अ़ज़ीम
जिसकी हर हर अदा वाजिबुल एहतिराम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

जिस की आमद से बादे नसीम आ गई
रहमते हक़ की हर सू घटा छा गई
छा गई और फिर नूर बरसा गई
ग़म की मारी थी दुनिया सुकूं पा गई
ज़िन्दगी भर पिलाया महब्बत का जाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

कारवाँ गुम था तारीक और रात थी
ख़ौफनाक एक जंगल था बरसात थी
सारी दुनिया थी क्या बहरे ज़ुलमात थी
बद हवासी थी बिगड़ी हुई बात थी
आ गया ज़ुलमते शब में माहे तमाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

जाहिलीयत में औरत थी एक जानवर
ठोकरें खाती फिरती थी वह दर बदर
राहे मंज़िल से अपनी थी वह बेख़बर
कोई उस का न था, शाम थी बे सहर
औरतों को दिया हुर्रियत का मकाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

जिस ने कुन्दन बनाया मिसे खाम को
जिस ने कुरबाँ किया हक़ पे आराम को
सुब्ह से जिस ने बदला हर एक शाम को
सारे आलम में फैलाया इस्लाम को
जिस पे नाज़िल हुआ है खुदा का कलाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

मोजिज़ा जिस का अदना था शक़्कुल क़मर
जिस की आमद जहाँ में नसीमे सहर
उस की आमद न होती जहाँ में अगर
ठोकरें खाती इन्सानियत दर बदर
ले के आया महब्बत का दिलकश पयाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

गालियाँ जिस ने दीं उस को तुहफ़े दिये
ज़ख़्म जिस से लगे, जख़्म उस के सिये
आफ़ियत की दुआ माँगी सबके लिए
की जफ़ा जिस ने, बदले वफ़ा से दिये
जिस ने सब को पिलाया महब्बत का जाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

जिसपे जानें फ़िदा जिस पे कुरबान दिल
आसमानों ज़मीं रंगो बू आबो गिल
रह गया मिट के वह हो गया जो मुख़िल
कुफ़्र भी सरनिगूं शिर्क भी है खजिल
खाके पा के बराबर ख़वासो अ़वाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

वह खुदा का नबी खातिमुल मुरसलीं
मतलअ़े नूर थी जिस की प्यारी जबीं
ज़ात ऐसी मिले गी बताओ कहीं
हो जो इतनी अ़ज़ीमो वजीहो हसीं
जिस की हर बज़्म जिसके सबू जिसके जाम
उस पे लाखों दुरूद उस पे लाखों सलाम

पाक दामानो पाकीजा क़ल्बो निगाह
उस की इफ़्फ़त पे अपने पराये गवाह
कीमिया बन गया जिस पे डाली निगाह
रख दिया मेट कर हर खताओ गुनाह
वो अफीफ़ो करीम और आली मक़ाम
उस पे लाखों दुरूद उसपे लाखों सलाम

नात शरीफ़

—ख़्वाजा हाली

वो नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें गरीबों की बर लाने वाला
मुसीबत में ग़ैरों के काम आने वाला
वो अपने पराए का ग़म खाने वाला
फक़ीरों का मलजा ज़ईफों का मावा
यतीमों का वाली गुलामों का मौला

ख़ाताकार से दर गुज़र करने वाला
बद अन्देश के दिल में घर करने वाला
मफ़ासिद का ज़ेरो ज़बर करने वाला
क़बाइल को शीरो शकर करने वाला
उतर कर हिरा से सु ए कौम आया
और एक नुस्ख–ए–कीमिया साथ लाया

मिसे खाम को जिसने कुन्दन बनाया
खरा और खोटा अलग कर दिखाया
अरब जिस पर करनों से था जिह्लछाया
पलट दी बस इक आन में उसकी काया
रहा डर न बेड़े को मौजे बला का
इधर से उधर फिर गया रुख़ हवा का

वह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अरब की ज़मीं जिसने सारी हिला दी
नई इक लगन सबके दिल में लगा दी
इक आवाज़ में सोती बस्ती जगा दी
पड़ा हर तरफ़ गुल यह पैग़ामे ह़क़ से
कि गूंज़ उठे दश्त व जबल नामे ह़क़ से

सबक़ फ़िर शरीअ़त का उनको पढ़ाया
ह़क़ीकत का गुर उनको इक इक बताया
ज़माने के बिगड़े हुऐ को बनाया
बहुत दिन के सोते हुओं को जगाया
खुले थे ना जो राज़ अब तक जहां पर
वह दिखला दिये एक परदा उठा कर

कि है ज़ाते वाहिद इबादत के लाइक़
ज़बान और दिल कि शहादत के लाइक़
उसी के हैं फ़रमां इताअत के लाइक़
उसी की है सरकार ख़िदमत के लाइक़
लगाओ तो लौ उससे अपनी लगाओ
झुकाओ तो सर उसके आगे झुकाओ

उमर रज़ि0 के सिवा सारी उम्मत से अफ़ज़ल हैं। चौथे हज़रत अली रज़ि0 जो हज़रत अबु बक्र रज़ि0, हज़रत उमर रज़ि0 और हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 के बाद तमाम उम्मत से अफ़ज़ल हैं। यही चारों बुजुर्ग हुजूर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आपके खलीफा हुए।

हज़रत अली रज़ि0 के बाद मुसलमानों में उनके बड़े बेटे हज़रत हसन रज़ि0 हैं मगर चूंकि उनकी खिलाफत सिर्फ 6 माह रही इसलिए अक्सर लोग खिलाफत में उनका ज़िक्र नहीं करते हैं हालांकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था कि ख़िलाफत तीस साल रहेगी इसके बाद बादशाहत आजाएगी हज़रत हसन की 6 माह की खिलाफत उन्हीं तीस साल में है।

प्रश्नः दसवीं मुहर्रम को हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत के वाकिये पर अफसोस करना गमगीन होना क्या दुरुस्त है?

उत्तरः सय्यिदना हुसैन रज़ि0 की शहादत का वाकिया यकीनन इस्लामी तारीख़ का एक अलमनाक वाकिया है लेकिन किसी की वफात या शहादत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना और ग़मजदह होना जाइज़ नहीं सिर्फ बीवी अपने शौहर की वफात पर चार महीने दस दिन सोग मनाएगी और यह उसके लिए वाजिब है। उससे जाइद नहीं अहले हक़ उलमा ने सय्यिदना हुसैन रज़ि0 की शहादत पर मातम और सोग मनाने को रवाफ़िज़ का तरीका बताया है और नाजाइज़ करार दिया है।

(मजमउल बिहारुल अनवार 550/3)

मदीने की गलियाँ

मदीने की गलियां हैं कितनी निराली
हैं रेतों के ज़र्रे तो लालो लाआली
बसा है निगाहों में मस्जिद का नक़्शा
वह जन्नत की क्यारी वह रौज़े की जाली
नहीं शक कि काबा है क़िबला हमारा
पर किबला नुमा है मदीने का वाली
है मक्के की रौनक तो काबे से बेशक
मदीने की लेकिन है किस्मत निराली
हबीबे खुदा याँ है आराम फरमाँ
है बादे खुदा जिनकी ज़ाते माआली
लगा जिस ज़मीं से है जिस्मे मुतह्हर
है रश्के दो आलम तो वह अरजे आली
कहा है मगर बाज़ उलमा ने यह भी
वह अर्शे बरीं से है रुत्बे में आली
कि अर्शे बरीं भी तो मख़लूक़े रब है
है मख़लूक अशरफ मदीने का वाली
दुरूदो सलाम उन पे लाखों करोड़ों
वो आखिर नबी हैं मुकाम उनका आली
असाग़िर यहाँ के हैं आलम में अहसन
अकाबिर में हैं याँ के शाने जमाली
कशिश क्या है रखी मदीने में रब ने
हर एक जाने मोमिन मदीने पे वारी
खुदा ने जिन्हें याँ की खिदमत है बख़्शी
वो महबूबे रब हैं रुत्बा है भारी
नबी के तरीक़े से मुँह गर वो मोड़ें
मदीने में रहने से हो जाएं आरी
चले आ रहे हैं अरब और अजम से
हैं किस्मत के ऊँचे मुकद्दर के आली
मेरे रब बता दे करम से तू अपने
कि आ़सी की अब फिर कब आयेगी बारी

चुनौतियों के बीच हिन्दी का सुन्दर भविष्य

—डॉ0 हैदर अली खाँ

आज़ादी के बाद हिन्दी हितैषी, अंग्रेज़ी नाम पट पर अलकतरा पोतते थे। आज वे अंग्रेजी के समर्थक हो गए हैं। युवाओं को समय से पूर्व 'टेबलेट' और 'लैपटाप' वे उपलब्ध करा रहे हैं। सौ दो सौ साल के हुकूमत में अंग्रेज़ी को आमजन तक नहीं पहुंचा सके। 1991 के बाद निजीकरण, उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के मायाजाल ने अंग्रेज़ी को झोपड़पट्टी तक पहुंचा दिया। गाँव देहात तक अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल का जाल बिछ गया। रिक्शा और खोनचे वाला भी अपनी संतान को टाई लगवाकर "साहब" बनाने की प्रक्रिया में लग गया है। 'हैलो', 'हाय' से अभिवादन हो रहा है। वह नम्बर और टेबल जानता है मगर 'गिन्ती', 'पहाड़ा' किसे कहते हैं, नहीं जानता। अम्मां—अब्बा, माता—पिता नहीं जानता। अब मम्मी डैडी जानने लगा है। अंग्रेज़ी भाषा और विदेशी संस्कृति, हिन्दी, भाषा और हिन्दुस्तानी तहज़ीब को धकिया कर किनारे लगाती जा रही है। हिन्दी तथा हिन्द देश के सामने यह स्थिति एक बड़ी चुनौती है।

अंग्रेज़ी स्कूलों का स्तर बेहतर है। हिन्दी माध्यम स्कूल, लगातार अपना आकर्षण खोते जा रहे हैं। इन स्कूलों का शिक्षक अपनी औलादों को भूलकर भी अपने इन स्कूलों में पढ़ाना नहीं चाहता। प्राथमिक बेसिक स्कूलों की स्थिति इतनी खराब हो गई है कि खुदान खास्ता अगर विश्वबैंक, राज्य व केन्द्र सरकार इनके "क्लोज़र" का निर्णय कर लें तो मिड—डे—मिल, वज़ीफा, मुफ़्त पुस्तक व ड्रेस आदि प्राप्त करने वाले गिने—चुने लाभार्थियों के अलावा कोई रोने वाला भी नहीं मिलेगा। शिक्षा की रोटी खाने वालों तथा हिन्दी के सच्चे हितैषियों के समक्ष यह दूसरी चुनौती है।

चुनौतियाँ गिनाने का मेरा अभिप्राय यह है कि शुतुर्मुर्ग की तरह रेत में सर छुपा लेने या मंदहूं आँख कहौं कुछ नांही" के राह पर चलने से चुनौति टलने वाली नहीं है। विस्फोटक स्थिति बनने के पहले हमें जाग जाना चाहिए। हमारी कामना है कि "हिन्दी जगत" के इन पावन क्षणों में चेत जाए।

हिन्दी का "आज" सावधान हो जाने का किन्तु इसका "भविष्य" सुन्दर है। देश की आधी आबादी हिन्दी समझती और बोलती है। हमारी राष्ट्रभाषा "हिन्दी" है। देश भर में अन्य भाषा—भाषी भी हिन्दी समझने लगे हैं इससे निकटता बनाने लगे हैं। दक्षिण से भी अब हिन्दी का विरोध नहीं सुनाई पड़ता। संघीय सरकार का तमाम प्रकाशन अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी में भी होता है। देश भर में फैले रेल के स्टेशनों का नाम हिन्दी में भी मिल जाता है।

देश की दूसरी मधुर भाषा और हिन्दी की बहन उर्दू का साहित्य देवनागरी लिपि में हस्तांतरित हो रहा है। इस्लाम, बौद्ध, सिख तथा ईसाई धर्मों का साहित्य हिन्दी में धडल्ले से प्रकाशित हो रहा है। समाज का हर व्यक्ति हिन्दी में निमंत्रण पत्र प्रकाशित कराने लगा है ताकि वह सर्वग्राह्य हो सके। क्रिया "वर्ब" अब

उर्दू–हिन्दी का एक ही है। इसी तरह अब आम बोल चाल में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि एक नई भाषा "हिंगलिश" जन्म ले रही है। वाक्यों में क्रिया 'वर्ब' हिन्दी का होता है किन्तु शेष शब्द अंग्रेजी के होत हैं। भाषा विज्ञानी इसे अच्छा भले न मानें, लेकिन जनता, जनार्दन है, वह व्यवहारिक रूप में अपना काम कर रही है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए।

फिल्मों और टेलीवीजन ने हिन्दी के विस्तार और इसे लोकप्रिय बनाने में बड़ा काम लिया है। विदेशी व्यापार व व्यवसाय का भी इस दिशा में अपना योगदान है। इसी का असर है कि 'फादर कामिल बुल्के' या बी0बी0सी0 के मार्क टूली और इनकी पत्नी आदि सैकड़ों विदेशी, हिन्दी को सहर्ष अपना लिए हैं। आज दर्जनों विदेशी विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों द्वारा हिन्दी को विधिवत पढ़ाई की व्यवस्था की जा रही है। देश में सर्वाधिक पुस्तकें यथा पत्र–पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। सफल अभिव्यक्ति के लिए अपनी भाषा ही सक्षम होती है अतः भारत का अधिकांश चिंतन मनन हिन्दी में हो रहा है। विज्ञान, तकनीक, अर्थशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विषयों का मौलिक लेखन हिन्दी में होने लगा है। यह सब हिन्दी के सुन्दर भविष्य का लक्षण है।

देश आवाज़ उठाने लगा है कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को भी मान्यता मिले। कई मित्र देश इस का समर्थन कर रहे हैं। हमें अपनी आवाज़ लगातार बुलन्द करते रहना चाहिए। हम आशा करते हैं कि आगामी किसी "हिन्दी दिवस" को हम इसका भी जश्न मनाएंगें।

हाईटेक होती हिन्दी–

विज्ञान और तकनीक के आधुनिक युग के प्रभावों से हिन्दी भी दूर नहीं रही। यह सजग रही और अपने को आधुनिकता के ढाँचे में ढालती रही है। "पिट्स मैंन' के 'शार्ट हैण्ड' की जगह 'ऋषि प्रणाली' की "हिन्दी आशुलिपि" ने ले लिया है। रेमिंगटन के अंग्रेज़ी टाइप मशीन के मात्र 'कीबोर्ड' को बदल कर हिन्दी टाइप किया जाने लगा है। हिन्दी इलेक्ट्रानिक टाइप मशीन, फिर कम्प्यूटर और अब सूचना प्रौद्योगिकी। आई0टी0। के तहत स्मार्ट सिस्टम के साथ हिन्दी कदमताल करते हुए दिखायी पड़ रही है।

कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना अब आसान हो गया है। बहुत से लोग टेबलेट और स्मार्टफोन पर भी हिन्दी में काम करने लगे हैं। कुछ इन 'गैजेट्स' के भीतर मौजूद सुविधाओं के जरिए, तो कुछ अलग से 'अप्लीकेशन' डाउनलोड करके। अच्छी बात यह है कि जिन गैजेट्स में हिन्दी मौजूद नहीं थी, उनके निर्माता भी भारत के यूजर्स की तरफ से आने वाली पुरजोर माँग को ज़्यादा समय तक अनदेखा करने की स्थिति में नहीं हैं। इसका एक उदाहरण है "ब्लैकबेरी" के ताजातरीन आप्रेटिंग सिस्टम में हिन्दी और कई अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति समर्थन शामिल किया जाना।

पिछले दो महीनों में 'गैजेट्स' के चार बड़े 'आप्रेटिंग सिस्टम' के नये संस्करणों के बीटा, कैट फाइनल वर्जन' रिलीज किए गए हैं। संयोगवश, चारों में हिन्दी के लिए समर्थन मौजूद हैं। ये चार मोबाइल

आप्रेटिंग सिस्टम हैं, आईओ एस–7, बीटा–6, एंड्रायड 4.3 जेलीबीन, ब्लैकबेरी 10.2। डेब्लेपर्स। और विंडोज 8.1 दुनिया मे टैब्लैट्स और स्मार्ट फोन के आप्रेटिंग सिस्टम में इन चारों की करीब 99 फीसदी हिस्सेदारी है। इनके चलन में आने के बाद टैबलट्स और स्मार्टफोन में हिन्दी का समर्थन मौजूद न होने संबंधी शिकायत अब हमेशा के लिए दूर हो जानी चाहिए।

एंड्रायड 4.3 जेलीबीन में हिन्दी–

'गूगल' का एंड्रायड गैजेट्स' की दुनिया का नम्बर वन 'आप्रेटिंग स्टिम बना हुआ है। ताजा संस्करण 4.3 जेलीबीन में भाषाओं के मामले में कुछ अहम बदलाव हुए हैं। इसके आने से एंड्राएड फोन में हिन्दी का पूर्ण समर्थन 'नेटिव सपोर्ट' उपलब्ध हो जाएगा। 'नेटिव सपोर्ट' का मतलब है, बिना किसी बाहरी अप्लीकेशन की मदद के कार्य करना।

अब ब्लैकबेरी ओएस 10.2 में हिन्दी के साथ "हिंगलिश" को भी बतौर भाषा जोड़ दिया गया है। शायद उन्हें लगता है कि हिन्दी के साथ–साथ उर्दू भाषी भी हिंगलिश का इस्तेमाल कर सकता है। टाईपिंग के लिए 'हिंगलिश' टेक्स्ट प्रोडिक्शन सुविधा भी मौजूद है। एक अच्चे एप्लीकेशन की सारी सुविधाएं भी मौजूद हैं। एक अच्छे एप्लीकेशन की मदद से यहां हिन्दी में टाइप करना सम्भव हो गया है। ❑❑

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहुअन्हू

–मुहम्मद उस्मान आज़िम

हुक्म देती है हमें अज़मत ग़नी उस्मान की
उनका हक है हम लिखें मिदहत ग़नी उस्मान की
आसमां पर भी रही शुहरत ग़नी उस्मान की
बाहया इस दर्जे थी तीनत ग़नी उस्मान की
दावते सिद्दीक़ पर ईमान लाए शौक़ से
इबतिदा में हो गई जन्नत ग़नी उस्मान की
दर्ज है तारीख़ में कुफ़्फ़ार से तंग आ के वह
मुल्क़े हब्शा की तरफ़ हिज़रत ग़नी उस्मान की
पाँचवीं पुश्त उनकी मिलती है शहे क़ौनैन से
है क़दीमी इस तरह निसबत ग़नी उस्मान की
रोज़े जुमा इक गुलाम आज़ाद फ़रमाते थे वह
यूं भी काम आती रही दौलत ग़नी उस्मान क़ी
तीसरे बरहक़ ख़लीफ़ा हैं वह जुन्नूरैन भी
लाज़िमी है हो बयां अज़मत ग़नी उस्मान की
बीरे रुमा अहले ईमां के लिए हासिल किया
यादगारी यह भी है ख़िदमत ग़नी उस्मान कीं
रंग लाएगी यक़ीनन पेश रब महशर के दिन
ख़ातिरे कुआँ है जो मेहनत ग़नी उस्मान की
बिल यक़ीं देखेगी दुनिया रश्क से हैरत से भी
हश्र के बाज़ार में क़ीमत ग़नी उस्मान की
क़ब्ल अज़ यौमे शहादत आक़ा सल्ल0 उनके मुन्तज़िर
यह भी देखी ख़ुल्दने इज़्ज़त ग़नी उस्मान की
उनका अपना ज़र्फ़ था ख़ामोश थे वरना वहां
बाग़ियों से बढ़ के थी ताक़त ग़नी उस्मान की
अज़्म था ना क़त्ल हो उनसे कोई भी कल्मागो
रब ने की उस अज़्म में नुसरत ग़नी उस्मान की
लाज़िमी है बा अदब आज़िम रहे मिदहत सरा
है सआदत और शरफ़ मिदहत ग़नी उस्मान की

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पो0 बा0 93, टैगोर मार्ग
लखनऊ 226007 यू0 पी0 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس/۹۳، ٹیگور مارگ،
لکھنؤ ۲۲۶۰۰۷ یوپی (بھارت)

दिनांक 10/11/13 باسمہ تعالیٰ تاریخ ۵/محرم الحرام ۱۴۳۵ھ

अहले ख़ैर हज़रात से अपील

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी खिदमात में मस्रूफ़ है, और तालिबाने उलूमे नुबुव्वत जूक़ दर जूक़ आ आ कर इस सरचश्मए इल्म से फैजियाब हो रहे हैं, तलबा की कसरत की वजह से दारुलउलूम की मस्जिद तंग हो गई है, बारिश या धूप में तलबा को बहुत तकलीफ होती है, इस सूरते हाल को देख कर अल्लाह तआला की मदद के भरोसे पर मस्जिद की मजीद तौसी का फैसला किया गया है।

मस्जिद दारुलउलूम के वसी सहेन के नीचे बेसमेन्ट और सहन पर छत डाल कर उसके ऊपर एक मंजिल तामीर करने का मंसूबा है, जिस पर ₹ 1,94,59,700/— ख़र्च का तख़्मीना है, जो इंशाअल्लाह अहले ख़ैर हज़रात के तआवुन से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम जरूरत की तरफ फ़ौरी तवज्जुह फरमाएंगे और नदवतुलउलमा के कारकुनों का हाथ बटाएंगे और मस्जिदों की तामीर में अल्लाह ने जो अज्र व सवाब रखा है उसके मुस्तहिक बन सकेंगे, रसूले अकरम सल्ल0 का इरशाद गिरामी है कि:—

"जो कोई अल्लाह के लिए मस्जिद तामीर कराएगा, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर तामीर कराएगा"।

मौ0 मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी
(नाएब नाज़िम, नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 वाज़ेह रशीद नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)

प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)

मौ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
(मोहतमिम, दारुलउलूम नदवतुल उलमा)

मौ0 मु0 हमज़ा हसनी नदवी
(नाज़िरे आम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।
NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733
(State Bank of India Main Branch, Lucknow)

और इस पते पर भेजें।
NAZIM NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW-226007 (U.P.)

Phone : (+91-0522) 2741316, 2740151 / Fax : (+91-0522) 2741023, 2741231.
E-mail address : nadwa@sancharnet.in / Website : www.nadwatululama.org.

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

भाजपा की मजबूरी का नाम है नरेन्द्र मोदी- इसमें कोई शक नहीं है कि मोदी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार घोषित कर भाजपा ने बड़ा दांव लगाया है। मोदी को इस तरह पेश किया गया है जैसे उनके बगैर पार्टी अस्तित्वहीन हो जाएगी। जबकि गुजरात के बाहर मोदी की सफलता का प्रमाण मिलना अभी बाकी है। चुनावों में अभी 6 महीने का समय है और इस तरह के संकेत फिलहाल नहीं हैं कि कोई पार्टी अपने दम पर सरकार बना लेगी। मतलब गठबंधन का दौर अभी समाप्त नहीं हुआ है। मोदी को लेकर जिस तरह की प्रतिकिया क्षेत्रीय दलों की है उसमें लगता नहीं कि भाजपा चुनाव से पहले या बाद में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का विस्तार कर सकेगी। इस मामले में उसकी रणनीति कतई स्पष्ट नहीं है। छह वर्ष केन्द्र की सत्ता में रहने और सत्ता से बाहर होने के करीब दस वर्ष बाद भी ऐसे गिने चुने राज्य हैं जहां भाजपा मजबूत जनाधार का दावा कर सकती है। लोक सभा की 542 में से मुश्किल से 300 सीटें हैं जहां वह उम्मीदवार दे सकने और लड़ाई में होने का दावा कर सकती है। ऐसे में 200 सीट जीत लेने की मंशा निश्चित ही बहुत बड़ा लक्ष्य है। भाजपा का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 1998 व 1999 में 182 सीट का रहा है। तब एक बार अटल बिहारी बाजपेयी को मौका दिए जाने के नाम पर और दूसरी बार कारगिल में हुई लड़ाई में बनी भावनात्मक लहर में उसे यह सफलता मिली थी। वरना 1996 के चुनाव में, जब बाबरी विध्वंश के बाद पार्टी भगवा लहर पर सवार थी तब वह केवल 168 के आँकड़े तक ही पहुंच पायी थी। सच्चाई यह है कि हिन्दुत्ववादी पार्टी मोदी को प्रधानमंत्री पद के लिए आदर्श उम्मीदवार के तौर पर पेश कर सकती है लेकिन अपने वोटरों में मोदी के लिए भगवान राम जैसी आस्था पैदा करना संभव नहीं है। मोदी भाजपा के कैडर व तटस्थ वोटर की पसंद हो सकते हैं, मगर उत्तर प्रदेश या बिहार या राजस्थान में स्थानीय स्तर पर दूसरे मुद्दे उन पर भारी नहीं पड़ेंगे इसकी कोई गारंटी नहीं है। मोदी की सबसे बड़ी ताकत भाजपा का कैडर और मध्यम वर्ग है। कांग्रेस के नेतृत्व में चल रही युपीए सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार और घपले घोटाले के आरोपों के अलावा मंहगाई और दिन प्रति दिन खराब हो रही अर्थव्यवस्था ने मध्यम वर्ग को निराश किया है। लेकिन मोदी की दावेदारी से उत्साहित भाजपा का कैडर यदि हिन्दुत्व का झण्डा लहराने की कोशिश करता है तो भाजपा को मध्यम वर्ग की सहानुभूति खोने का डर भी सताता है। जिस मध्यम वर्ग को मोदी में इस समय एक स्पष्ट विचार और अपने एजेंडा को क्रियांवित कर सकने की क्षमता रखने वाले नेता की छवि दिखाई दे रही है आने वाले दिनों में वह उन सवालों के जवाब भी जानना चाहेगा जो अभी अनुत्तरित हैं। मसलन अर्थव्यवस्था ठीक करने के लिए मोदी के पास क्या उपाय है? या अफगानिस्तान व पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा है उसे क्या वह बदल सकते हैं? या फिर नक्सल समस्या से निपटने में जो राज्य केन्द्र के रुख से सहमत नहीं हैं वह मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद अपनी राय बदल लेंगे वगैरह वगैरह। □□